01 ज्योतिष की राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
सम्पादक : के. एम. सिन्हा (ज्योतिषाचार्य)

ज्योतिष विज्ञान

राहु केतु का राशि परिवर्तन

सितम्बर 2020

साढ़े साती

कालसर्प और उसके प्रकार

कर्क राशि : एक परिचय

सुशान्त सिंह राजपूत को मिलेगा न्याय ?

भारत-चीन विवाद ज्योतिषी विश्लेषण

इस महीने में त्योहार/व्रत

विंशोत्तरी दशा की महत्ता

शनि के विभिन्न पाय और प्रभाव

रत्नों का रहस्यमयी संसार

प्रश्न आपके

क्या कहती है नरेन्द्र मोदी की कुण्डली

मासिक राशिफल

अश्विनी नक्षत्र

Kundali expert™ For Better Future

www.kundaliexpert.com Contact: 98-183-183-03

ज्योतिषाचार्य

के.एम.सिन्हा

"जीवन की लड़ाईयाँ सदैव मजबूत और परिश्रमी लोग नहीं जीता करतें जितता आज नही तो कल वहीं है जिसे यकीन है की वो जितेगा "

प्रथम संस्करण

Publisher

KM ASTROGURU PVT. LTD.

रासायनिक प्रवक्ता के रूप में करियर शुरू करने वाले, आज श्री के.एम.सिन्हा न केवल भारत में, बल्कि दुनिया के कई अन्य हिस्सों में एक प्रसिद्ध वैदिक ज्योतिषी और कुंडली विशेषज्ञ हैं। वह कुछ राजनीतिक घटनाओं के बारे में सटीक भविष्यवाणियां करने के लिए भी जाने जाते हैं। कुंडली एक्सपर्ट की अपनी मुख्य शाखा गाजियाबाद में स्थित है। उनकी भविष्यवाणियां वैदिक ज्योतिष पर आधारित हैं जहां वे कुंडली या उसके द्वारा प्रदान किए गए समय, स्थान और तिथि के आधार पर विभिन्न ग्रहों की स्थिति का अध्ययन करते हैं। वह लोगों को आने वाली समस्याओं को दूर करने और उनसे खुद को रोकने के उपाय भी प्रदान करता है।

ज्योतिषीय नियमों को गणितीय मॉडल में अनुवाद करके उनके द्वारा ज्योतिषीय भविष्यवाणियां भी की गई हैं। एक ज्योतिषी बनने के अपने सपने को पूरा करने और आगे बढ़ने के लिए, श्री के.एम.सिन्हा ने रसायन विज्ञान कोचिंग कक्षाएं प्रदान करना शुरू किया। ज्योतिष को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन के 15 वर्षों को समर्पित किया और ज्योतिषीय सिद्धांतों का अध्ययन, विश्लेषण और समझ शुरू किया। ज्ञान प्राप्त करने की इस यात्रा ने अब उन्हें एक ज्योतिषी में बदल दिया है और पिछले 5-6 वर्षों से वह पेशेवर रूप से ज्योतिष का कार्य कर रहे है।

उनके अनुसार ज्योतिष एक विज्ञान है, जो विभिन्न ग्रहों की स्थिति के सिद्धांतों पर काम करता है। अलग-अलग घरों में विभिन्न ग्रहों की स्थिति लोगों के जीवन में बहुत प्रभावशाली भूमिका निभाती है। सटीक पूर्वानुमान प्राप्त करने के लिए, उसके समय, स्थान और जन्म तिथि के बारे में सही जानकारी होना बहुत महत्वपूर्ण है।

के.एम. सिन्हा, के अनुसार जन्म के समय या जन्म की तारीख, समय और स्थान प्रदान करके बनाई गई कुंडली बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कुंडली किसी भी ज्योतिषीय भविष्यवाणियों को बनाने का आधार है। एक जन्म कुंडली या कुंडली 12 घरों द्वारा बनाई जाती है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करती है। तारों की स्थिति (यानी 9 राशि वाले ग्रह) एक तारीख, स्थान और जन्म के समय के अनुसार इन घरों में स्थित होती है कुंडली वही है लेकिन ग्रहों की स्थिति बदलती रहती है जो लोगों के जीवन में प्रभाव डालती है।.

ज्योतिषीय भविष्यवाणियों से जो लाभ प्राप्त हो सकते हैं, वह यह है कि उन्हें अपने जीवन के कठिन समय से अवगत कराया जा सकता है, उन समस्याओं का समाधान करने के लिए उन कठिनाइयों और उपायों का सामना करने से कैसे रोका जा सकता है। इसके अलावा, कोई कैसे अच्छे समय का पूरा उपयोग कर सकता है और इसे अपने पक्ष में कर सकता है। इस बात का भी ध्यान दिया जाता है

मुख्य रूप से गाजियाबाद में स्थित, दिल्ली में सर्वश्रेष्ठ ज्योतिषी के.एम.सिन्हा एक प्रसिद्ध कुंडली विशेषज्ञ हैं और उन्होंने कई व्यक्तिगत और राजनीतिक भविष्यवाणियों को सटीक रूप से किया है। यह व्यक्तिगत जीवन हो, पेशेवर, कैरियर या स्वास्थ्य कोई भी आसानी से परामर्श कर सकता है और विशेषज्ञ की सलाह ले सकता है। वह हस्तरेखा विज्ञान और अंकशास्त्र के माध्यम से भी भविष्यवाणियां कर सकते है । एक कुंडली चार्ट तैयार कर कुंडली विश्लेषण, भविष्यवाणियों और उपायों को कुंडली विशेषज्ञ द्वारा नाममात्र राशि पर प्रदान किया जाता है। यह नाममात्र शुल्क एक वर्ष के लिए वैध है और कोई भी वर्ष के दौरान कभी भी हमारे विशेषज्ञों से सलाह ले सकता है।

ज्योतिष विज्ञान के इस प्रथम संस्करण में पूरी कोशिश की गई है कोई कमी ना रहें फिर भी यदि कोई त्रुटि हुई है तो आप अपनी प्रतिक्रियाएं info@kundaliexpert.com पर भेज सकते है । आप सभी का बहुत आभार

विषय सूची

विंशोतरी दशा की महत्ता.....(3–4)

कर्क राशि एक परिचय.....(5–6)

रत्नों का रहस्यमय संसार.....(7–8)

कालसर्प योग और उसके प्रकार.....(8–11)

शनि के विभिन्न पाय.....(11–14)

राहु केतु का राशि परिवर्तन.....(15–16)

सितम्बर माह व्रत/त्यौहार.....(17)

क्या मिलेगा सुशांत को न्याय.....(18)

भारत चीन विवाद कब तक?.....(18–19)

आपके प्रश्नों के उतर.....(19)

आपके नक्षत्र (अश्विनी नक्षत्र).....(20–21)

सितम्बर राशिफल.....(21)

© All Right Reserved to KM ASTROGURU PVT. LTD.

विंशोतरी दशा की महत्ता

मनुष्य की आयु का निर्धरण कुंडली के अष्टम स्थान से किया जाता है विंशोतरी दशा के अनुसार अलग – अलग ग्रहों की अलग–अलग समय निर्धारण किया गया है । जो ग्रह क्रूर होते है उनको सामन्यता 6 या 7 वर्ष की आयु प्राप्त है उदाहरण के लिए सूर्य 6 वर्ष, मंगल 7 वर्ष, केतु 7 वर्ष की दशा निर्धारित है । इसके विपरीत वृहस्पति 16 वर्ष, शनि 19 वर्ष, शुक्र 20 वर्ष बुध 17 वर्ष, चन्द्रमा को 10 वर्ष दिया गया है ।

इस प्रकार मनुष्य की आयु 120 वर्ष प्राप्त है अष्टम स्थान, अष्टमेश और अष्टम का कारक शनि के द्वारा यह निर्धारण होता है कि जातक कितने वर्ष की आयु प्राप्त करेगा हालाकि कुछ ज्योतिषाचार्या में मतभेद है । कुछ मुनष्य की आयु को 100 वर्ष मानते है चन्द्रमा जन्म के समय जिस नक्षत्र में प्रवेश करता है उस नक्षत्र के स्वामी ग्रह की दशा प्रारम्भ हो जाती है । निम्न योगो के बारे में ज्योतिषी दृष्टी कोण से अवश्य समझना चाहिए ।

लघु पाराशरी सिद्धांत

ज्योतिष की एक नहीं बल्कि कई धाराएं साथ साथ चलती रही है । वर्तमान में दशा गणना की जिन पद्धतियों का हम इस्तेमाल करते है, उनमें सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली विधि पाराशर पद्धति है । सही कई से पाराशर की विंशोत्तरी दशा के इतर कोई दूसरा दशा सिस्टम दिखाई भी नही देता है । महार्षि पाराशार के फलित ज्योतिष संबंधी सिद्धांत लघु पाराशरी में मिलते है । इनमें कुछ प्रसिद्ध सूत्र निम्न है ।

1. सभी ग्रह जिस स्थान पर बैठे हों, उससे सातवें स्थान को देखते है । शनि तीसरे व दसवें, गुरू नवम व पंचम तथा मंगल चतुर्थ व अष्टम स्थान को विशेष देखते है ।

2.(अ) कोई भी ग्रह त्रिकोण का स्वामी होने पर शुभ फलदायक होता है । ;लग्न, पंचम और नवम भाव को त्रिकोण कहते हैद्ध तथा त्रिषडाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है तीसरे, छठें और ग्यारहवें भाव को त्रिषडाय कहते है ।

2. (ब) अ वाली स्थिति के बावजूद त्रिषडाय के स्वामी अगर त्रिकोण के भी स्वामी हो तो अशुभ फल ही आते है । ;मेरा नोटः त्रिषडाय के अधिपति स्वराशि के होने पर पाप फल नहीं देते है – काटवे ।

3 सौम्य ग्रह (बुध, गुरू, शुक्र और पूर्ण चन्द्र) यदि केन्द्रो के स्वामी हो तो शुभ फल नहीं देते है । क्रूर ग्रह ;रवि, शनि, मंगल, क्षीण चंद्र और पापग्रस्त बुध यदि केन्द्र के अधिपित हो तो वे अशुभ फल नहीं देते है । ये अधिपति भी उत्तरोतर क्रम में बली है । ;यानी चतुर्थ भाव से सातवां भाव अधिक बली, तीसरे भाव से छठा भाव अधिक बली

4. लग्न से दूसरे अथवा बारहवें भाव के स्वामी दूसरे ग्रहों के सहचर्य से शुभ अथवा अशुभ फल देने में सक्षम होते है । इसी प्रकार अगर वे स्व स्थान पर होने के बजाय अन्य भावों में हो तो उस भाव के अनुसार फल देते है । ;मेरा नोटः इन भावों के अधिपतियों का खुद का कोई आत्मनिर्भर रिजल्ट नहीं होता है ।

5. अष्टम स्थान भाग्य भाव का व्यय स्थान है ;सरल शब्दों में आठवां भाव नौंवे ीााव`से बारहवें स्थान पर पड़ता हैद्ध, अतः शुभफलदायी नहीं होता है । यदि लग्नेश भी हो तभी शुभ फल देता है (यह स्थिति केवल मेष और तुला लग्न में आती है) ।

6. शुभ ग्रहों के केन्द्राधिपति हाने के दोष गुरू और शुक्र के संबंध में विशेष है । ये ग्रह केन्द्राधिपित होकर मारक स्थान ;दूसरे और सातवें भावद्ध में हो या इनके अधिपित हो तो बलवान मारक बनते है ।

7. केन्द्राधिपति दोष शुक्र की तुलना में बुध का कम और बुध की तुलना में चंद्र का कम होता है । इसी प्रकार सूर्य और चंद्रमा को अष्टमेष होने को दोष नहीं लगता है ।

8. मंगल दशम भाव का स्वामी हो तो शुभ फल देता है । किंतु त्रिकोण का स्वामी भी हो तभी शुभफलदायी होगा । केवल दशमेष होने से नहीं देगा । (यह स्थिति केवल कर्क लग्न में ही बनती है ।)

9. राहु और केतु जिन जिन भावों में बैठते है, अथवा जिन जिन भावों के अधिपतियों के साथ बैठते है तब उन भावों अथवा साथ बैठे भाव अधिपतियों के दवारा मिलने वाले

फल ही देंगे ।

10. ऐसे केन्द्राधिपित और त्रिकोणाधिपति जिनकी अपनी दूसरी राशि भी केन्द्र और त्रिकोण को छोड़कर अन्य स्थानों में नहीं पड़ती हो, तो ऐसे ग्रहों के संबंध विशेष योगफल देने वाले होते है ।

11. बलवान त्रिकोण और केन्द्र के अधिपित खुद दोषयुक्त हों, लेकिन आपस में संबंध बनाते है तो ऐसा संबंध योगकारक होता है ।

12. धर्म और कर्म स्थान के स्वामी अपने अपने स्थानों पर हों अथवा दोनों एक दूसरे के स्थानों पर हो तो वे योगकारक होते है । यहां कम्र स्थान दसवां भाव है और धर्म स्थान नवम भाव है । दोनों के अधिपतियों का संबंध योगकारक बताया गया है ।

13. नवम और पंचम स्थान के अधिपतियों के साथ बलवान केन्द्राधिपति का संबंध शुभफलदायक होता है । इसे राजयोग कारक भी बताया गया है ।

14. योगकारक ग्रहों (यानी केन्द्र और त्रिकोण के अधिपतियों) की दशा में बहुधा राजयोग की प्राप्ति होती है । योगकारक संबंध रहित ऐसे शुभ ग्रहों की दशा में भी राजयोग का फल मिलता है ।

15. योगकारक ग्रहों से संबंध करने वाला पापी ग्रह अपनी दशा में तथा योगकारक ग्रहों की अंतरदशा में जिस प्रमाण में उसका स्वयं का बल है, तदअनुसार वह योगज फल देगा । (यानी पापी ग्रह भी एक कोण से राजयोग में कारकत्व की भूमिका निभा सकता है ।)

16. यदि एक ही ग्रह केन्द्र व त्रिकोण दोनो का स्वामी हो तो योगकारक होता ही है । उसका यदि दूसरे त्रिकोण से संबंध हो जाए तो उससे बड़ा शुभ योग क्या हो सकता है ?

17. राहु अथवा केतु यदि केन्द्र या त्रिकोण में बैडे हो और उनका किसी केन्द्र अथवा त्रिकोणाधिपित से संबंध हो तो वह योगकारक होता है

18. धर्म और कर्म भाव के अधिपतियानी नवमेश और दशमेश यदि क्रमशः अष्टमेश और लाभेश हों तो इनका संबंध योगकारक नहीं बन सकता है । (उदाहरण के तौर पर मिथुन लग्न) । इस स्थिति को राजयोग भंग भी मान सकते है ।

19. जन्म स्थान से अष्टम स्थान को आयु स्थान कहते है । और इसे आठवें स्थान से आठवां स्थान आयु की आयु है अर्थात लग्न से तीसरा भाव । दूसरा भाव आयु का व्यय स्थान कहलाता है । अतः दृवितीय एवं सप्तम भाव मारक स्थान माने गए है ।

20. दृवितीय एवं सप्तम मारक सीानों में दृवितीय स्थान सप्तम की तुलना में अधिक मारक होता है । इन स्थानों पर पाप ग्रह हों और मारकेश के साथ युक्ति कर रहे हों तो उनकी दशाओं में जातक की मृत्यु होती है ।

21. यदि उनकी दशाओं में मृत्यु की

आंशका न हो तो सप्तमेश और द्वितीयेश की दशाओं में मृत्यु होती है ।

22. मारक ग्रहो की दशाओं में मृत्यु न होती हो तो कुण्डली में जो पापग्रह बलवान हो उसकी दशा में मृत्यु होती है । व्यायाधिपति की दशा में मृत्यु न हो तो व्ययाधिपति से संबंध करने वाले पापग्रहों की दशा में मरण योग बनेगा । व्ययाधिपति का संबंध पापग्रहों से न हो व्ययाधिपति से संबंधित शुभ ग्रहों की दशा में मृत्यु का योग बताना चाहिए ऐसा समझना चाहिए व्ययाधिपति का संबंध शुभ ग्रहों से भी न हो तो जन्म लग्न से अष्टम स्थान के अधिपति की दशा में मरण होता है । अन्यथा तृतीयेश की दशा में मृत्यु होगी । (मारक स्थानाधिपति से संबंधित शुभ ग्रहों को भी मारकत्व का गुण प्राप्त होता है ।)

23. मारक ग्रहों की दशा में मृत्यु में आवे तो कुण्डली में जो बलवान पापग्रह है उनकी दशा में मृत्यु की आशंका होती है । ऐसा विद्वानों की मारक कल्पित करना चाहिए

24. पापफल देने वाला शनि जब मारक ग्रहों से संबंध करता है तब पूर्ण मारकेशी को अतिक्रमण कर निःसंदेह मारक फल देता है । इसमें संशय नहीं है ।

25. सभी ग्रह अपनी अपनी दशा और अंतरदशा में अपने भाव के अनुरूप शुभ अथवा अशुभ फल प्रदान करते है । (सभी ग्रह अपनी महादशा की अपनी ही अंतरदशा में शुभफल प्रदान नहीं करते है)

26. दशानाथ जिन ग्रहों के साथ संबंध करता हो और जो ग्रह दशानाथ सरीखा समान धर्मा हो, वैसा ही फल देने वाला हो तो उसकी अंतरदशा में दशानाथ स्वयं की दशा का फल देता है ।

27. दशानाथ के संबंध रहित तथा विरू(फल देने वाले ग्रहों की अंतरदशा में दशाधिपति और अंतरदशाधिपति दोनों के अनुसार दशाफल कल्पना करके समझना चाहिए ।

28. केन्द्र का स्वामी अपनी दशा में संबंध रखने वाले त्रिकोणेश की अंतरदशा में शुभफल प्रदान करता है । त्रिकोणेश भी अपनी दशा में केन्द्रेश के साथ यदि संबंध बनाए तो अपनी अंतरदशामें शुभफल प्रदान करता ह । यदि दोनों का परस्पर संबंध न हो तो दोनों अशुभ फल देते है ।

29. यदि मारक ग्रहों की अंतरदशा में राजयोग आरंभ हो तो यह अंतरदशा मनुष्य को उत्तरोतर राज्याधिकार से केवल प्रसिद्ध कर देती है । पूर्ण सुख नही दे पाती है ।

30. अगर राजयोग करने वाले ग्रहों के संबंधी शुभग्रहों की अंतरदशा में राजयोग का आरंभ होवे तो राज्य से सुख और प्रतिष्ठा बढ़ती है । राजयोग करने वाले से संबंध न करने वाले शुभग्रहों की दशा प्रारंभ हो तो फल सम होते है । फलों में अधिकता या न्यूनता नहीं दिखाई देगी । जैसा है वैसा ही बना रहेगा ।

31. योगकारक ग्रहों के साथ संबंध करने वाले शुभग्रहों की महादशा के योगकारक ग्रहो की अंतरदशा में योगकारक ग्रह योग का शुभफल क्वचित देते है ।

32. राहू केतू यदि केन्द्र ;विशेषकर चतुर्थ और दशम स्थान मेंद्ध अथवा त्रिकोण में स्थित होकर किसी भी ग्रह के साथ संबंध नहीं करते हो तो उनकी महादशा में योगकारक ग्रहो की अंतरदशा में उन ग्रहों के अनुसार शुभयोगकारक फल देते है । ;यानी शुभारूढ़ राहू केतू शुभ संबंध की अपेक्षा नही रखतें । बस वे पाप संबंधी नहीं होने चाहिए तभी कहे हुए अनुसार फलदायक होते है । द्ध राजयोग रहित शुभग्रहो की अंतरदशा में शुभफल होग, ऐसा समझना चाहिए ।

33. यदि महादशा के स्वामी पाप फलप्रद ग्रह हो तो उनके असंबंधी शुभग्रह की अंतरदशा पापफल ही देती है । उन महादशा के स्वामी पापी ग्रहों के संबंधी शुभग्रह की अंतरदशा मिश्रित शुभ एवं अशुभ फल देती है । पापी दशाधिप से असंबंधी योगकारक ग्रहों की अंतरदशा अत्यंत पापफल देने वाली होती है ।

34. मारक ग्रहों की महादश में उनके साथ संबंध करने वाले शुभग्रहों की अंतरदशा में दशानाथ मारक नहीं बनता है । परन्तु उसके साथ संबंध रहित पापग्रह अंतरदशा में मारक बनते है ।

35. शुक्र और शनि अपनी अपनी महादशा में अपनी अपनी अंतरदशा में अपने अपने शुभ फल देते है । यानी शनि महादशा में शुक्र की अंतरदशा हो तो शनि के फल मिलेंगे । शुक्र की महादशा में शनि के अंतर में शुक्र के फल मिलेंगे । इस फल के लिए दोनों ग्रहों के आपसी संबंध की अपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए ।

36. दशम स्थान का स्वामी लग्न में और लग्न का स्वामी दशम में, ऐसा योग हो तो वह राजयोग समझना चाहिए । इस योग पर विख्यात और विजयी ऐसा मनुष्य होता है ।

37. नवम स्थान का स्वामी दशम में और दशम स्थान का स्वामी नवम में हो तो ऐसा योग पर विख्यात और विजयी पुरूष होता है ।

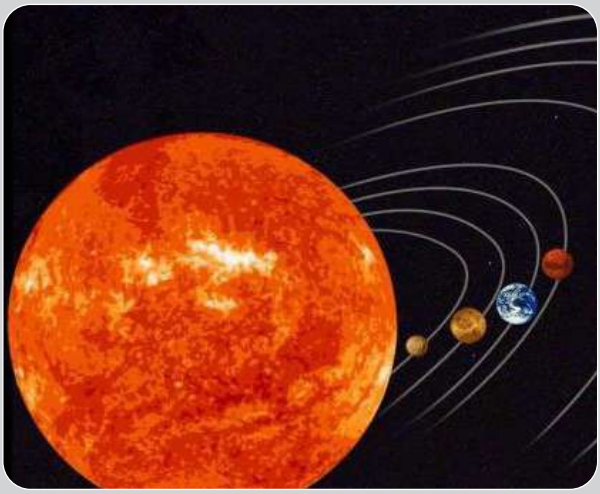

Kundali expert For Better Future
LEARN ASTROLOGY
WITH
Astrologer KM SINHA
Course Starting From 1st Sept. 2020
"Book Today & Get 50% Inaugral Discount*"
*only for 1st 20 Person

USE
COUPON CODE
"KUNDALIEXPERT"

• BASIC COURSE •
KM SINHA
World Famous Astrologer
CALL US : 98-183-183-03 I www.kundaliexpert.com

12 राशियों के क्रम में चौथा स्थान कर्क राशि का है । इस राशि का निर्देशांक 4 है । जन्मांग के राशियों के नाम न लिखाकर उनके निर्देशांक लिखने की परिपाठी है । नक्षत्र : पुनर्वसु नक्षत्र का अंतिम चौथा चरण, पुष्य नक्षत्र के चार चरण एव आश्लेषा नक्षत्र के चार चरण मिलकर कर्क राशि बनती है ।

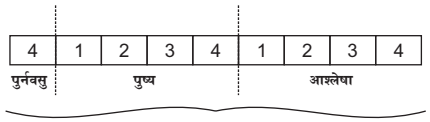

4	1	2	3	4	1	2	3	4
पुनर्वसु	पुष्य				आश्लेषा			

कर्क राशि

निम्न कोष्टक में चन्द्र के अंश, लक्षण, चरण, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, योनी, नाड़ी, गण एव नामाक्षर के बारे में जानकारी दी गई है । कर्क राशि की आकृति केकड़े जैसी है । पृथ्वी के क्रांति अंश पर आधारित विषुववृत रेखा से 24 से 20 अंशों तक इस राशि की व्याप्ति मानी जाती है । **कर्क राशि के नामः कुलीर, कर्कोटक, कर्कट एवं अंग्रेजी में (केन्सर)** यह राशि सम शरीर की प्रवासी, स्त्री राशि होकर केकड़े की आकार की धातुसंज्ञक होती है । इसका निवास उतर दिशा का उपवन, जलाशय, नदी, तालाब, सागर किनारे जैसे सुरम्य स्थानों पर होता है । चंचल, कोमल, सौम्य, चर बाल्यावस्था, रक्तश्वेतवर्णी, रजोगुणी, जलतत्व से युक्त, रात्रिबली, कम्पस, प्रकृति की शूद्र जाति की, पृषठोदश, सम राशि है इसका निवास स्थान चौल देश है । स्वामी चंद्र चार सोमवार एवं अंक 2 है ।

शरीर के हदय, पेट फेफडो पर इसका प्रभाव रहता है । उतम श्रेणी के अनाज, फल, किराणामाल, चाय, चांदी एवं पारा का आधिपत्य कर्क राशि के अधीन है ।

कर्क राशि के लोग जल्द ही सर्दी खाँसी से ग्रसित हो जाते है और काफी भावात्मक हो जाते है ।

कर्क राशि (पुनर्वसु नक्षत्र चतुर्थ चरण)

सामान्यता पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति हसमुख स्वभाव का भोग विलासी सुखी और विनोदी होते है । और चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक शुभ एवं पवित्र कार्यो में रूचि शील और सामाजिक और धार्मिक कार्यो में कुछ बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते है ।

कर्क राशि (पुष्य नक्षत्र)

पुष्य नक्षत्र में जन्मा व्यक्ती के पास धन सम्पति अत्याधिक मात्रा में होती है और उनमें धार्मिक प्रावृति उच्च कोटि की पाई जाती है । शरीर सुन्दर स्वभाव शांत होता है माता पिता दोनों से सुख प्राप्त करता है । और वाहन, भूमि जीवन काल में अर्जित कर पाता है । सामान्यता इनको धूमना फिरना पसंद होता है । और कई बार मजबूरी में यात्रा पर यात्रा लगी रहती है । परन्तु शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहते है । लोगो की दया पर निर्भर ना रहते हुये अपने पुरुषार्थ के कारण आगे निरंतर बढ़ते रहते है ।

पुष्य नक्षत्र में दोष

सामान्यता इस नक्षत्र में पीड़ित व्यक्ति क्षय अस्थिशूल, सांधा दुखी, ज्वर, जैसी पीड़ा से पुष्य नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों को सताती है । साथ ही भाग्योदय में अनेक व्यत्सस खड़े होते है

उपाय :

इस परेशानी से छुटकारा पाने के लिए कुंकूम, गंध कमलपुष्प, घृतपायस, गुग्गुल, शु(घी का दीपक एवं शक्कर इत्यादि से विष्णुस्वरूप देवगुरू का विधि वत पूजन करें गुरूवार के दिन पीले वस्त्र का दान दें । आटे के मोंदक बनाकर निम्न मंत्र उच्चारण के साथ मोदक की आहुतियां दे ।

अलगम से इस मंत्र का दस हजार बार जाप करके घी एवं पायस की आहुतियां देकर हवन करें

'' ऊँ बृहस्पते अतियदर्योअहदि युमद्विभति कृतमज्जतेषु ।
य दुरीयच्छन सश्रतुप्रजाज दस्मातु द्रविणधेही चित्रम ऊँ बृहस्पतेये नमः।।''

कर्क राशि (पुष्य नक्षत्र प्रथम चरण)

प्रथम चरण : पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा जातक चिड़चिड़ें स्वभाव का सभा–चतुर, बु(िमान, दया, ममता, स्नेह से युक्त परोपकारी, जनमत के कामों से रूचि रखने वाला, आत्यरोग, वायु रोग, आंतो में सूजन आदि रोगो से पीड़ित रहता है ।

कर्क राशि (पुष्य नक्षत्र द्वितीय चरण)

द्वितीय चरण : पुष्य नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्मा जातक आमतौर पर व्यापार में असफल रहता है । लड़ाई–झगड़ा, वाद–विवाद एवं कुकदमेबाजी से डरने वाला किन्तु लोगो को सलाह, उपदेश शिक्षा देने वाला रहता है ।

कर्क राशि (पुष्य नक्षत्र तृतीय चरण)

तृतीय चरण : पुष्य नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्मा जातक सदा हसमुख, प्रसन्नचित, बु(िमान एवं संबंधियों का अनुसरण करने वाला होता है ।

कर्क राशि (पुष्य नक्षत्र चतुर्थ चरण)

चतुर्थ चरण : पुष्य नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा जातक झगडालू चिड़चिड़ा, अन्यलिगी पर मुग्ध होने वाला एवं कलह कारक होता है ।

कर्क राशि (आश्लेषा नक्षत्र)

इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति किसी की भी नहीं सुनता है अत्यंत जिद्दी स्वभाव का होता है । सामान्य रूप से बुरे कार्यो में रूचि रखता है । और भोग कामवासना में लीन रहता है । जातक हमेशा भ्रमित होने के कारण लोगो को कष्ट पहुचाँने का प्रयास करता रहता है । ऐसे जातक किसी के अधीन कार्य करना पसंद नही करते है । और इस कारण साझेदारी में नुकसान उठाना पड़ता है । माता–पिता का सहयोग पूर्ण नहीं मिल पाता और अपने जीवन को जीने के लिये अनेक प्रकार के षडयंत्र करता रहता है । हालाकि व्यवसयिक के तौर पर ये वकील, इंजीनियर, डॉक्टर, सुनार, लुहार के रूप में सफल होते है । किसी भी कार्यो को प्रारम्भ तो करते है। परन्तु उसे बीच में ही अधूरा छोड़ देते है ।

कर्क राशि (आश्लेषा नक्षत्र की व्याधियाँ)

आश्लेषा नक्षत्र में जन्में स्त्री–पुरूष एवं बालकों को सर्वांगपीड़ा, पैरो की तकलीफ, संतति न होना, अंगीकृत कार्यो में अड़चनें उत्पन्न होकर असफल होना आदि बातें सहनी पडती है । आश्लेषा नक्षत्र का स्वामी सर्प होने के कारण ही यह सब भुगतना पड़ता है ।

उपाय :

जस दिन आश्लेषा नक्षत्र हो उस दिन सोने की नाश प्रतिमा बनवाकर विधिवत् उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें । सोने की नागप्रतिमा कम से कम एक ग्राम सोने से बन जाती है । कुंकुंभ, अगरगंध, अगस्तपुष, घी गुग्गुलधूप एवं घी के दीपक से पूजन अर्चन करें ।

दूध चावल से बनी खीर का भोग चढ़ायें । यथाशक्ति दान दें । गेंहू, मूंग, सत्तू, तिल, शेदेलोफ समुद्रनमक गाय का दूध दही, नारियल, जीरा, सोंठ शक्कर, ऊंख, हिरडा, लवंग, इलायची इत्यादि में जो भी उपबल्ध हो, उन हविष्यों के पदार्थों से आहुतियां देकर हवन करें । हर मास आश्लेषा के दिन सुवर्णलता का पूजन करें । या फिर पूर्ण अनुष्ठान से त्र्यंबकेश्वर (महाराष्ट) सर्पशंति–कालसर्पशांति एक ही बार करवा ले ।

निम्न मंत्र का दस हजार बार जाप करें –

ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के चु पृथिनी मनुः ये ।

अन्तरिक्षेदिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। ऊँ नमो केशवराय नमः ।।

कर्क राशि के व्यक्तियों का भविष्यः

कर्क राशि एक जल तत्व राशि होने के कारण जातक को जल्द सर्दी, खाँसी और जुकाम हो जाती है और जातक अत्यंत भावुक रहता है । ऐसे व्यक्ति कला और शास्त्र के क्षेत्र मे आगे बढ़ते रहते है । पुष्प और सुगंधित द्रव्यों को इनकी चाहत होती है । सामान्यता सम्पति का सुख प्राप्त होता है । स्त्री में विशेष रूचि दिखना और जल्दी कार्यो को पूर्ण कर लेना इनका स्वभाव होता है । क्योंकि इनके इष्टदेव चन्द्रमा की गाति तेज होती है । जल क्रीड़ा का भी ये आनंन्द उठाते है ।

परोपकारी, स्त्री प्रेमी, आल्यावस्था में आर्थिक दृष्टि से कमजोर किन्तु प्रौढावस्था में आर्थिक स्थिति में सुधार आता है । जीवनयोग आमतौर पर कम श्रेणी का रहता है । शिरोव्यथा एवं मस्तक रोग से पीड़ित रहते है । शरीर के बाये हिस्से को अग्नि से भय रहता है । मित्र परिवार विशाल रहता है । ज्योतिष कार्य में सफलता मिलती है । माता पिता के लिए इनके मन में आदर की भावना निहित रहती है । जन्म के पहले एवं तीसरे वर्ष से गुप्तेन्द्रिय एवं जननेन्द्रियो विषयक क्लेश सहन करने पड़ते है । 31वें वर्ष में विषैले जंतु से परेशानी होती है ।

'32वें वर्ष में अनेक प्रकार की शरीरिकजीवनयोग' 85 से 96 वर्षों का रहता है । शास्त्रानुसार माघ महीना, शुक्ल पक्ष की नवमी एवं बार शुक्रवार घात वार रहता है ।

कफ राशि की महिलाएं कफ, वायु प्रकृति कीी होती है । स्थूल या छरहरे बदन की होती है । सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन सफल रहता है । दूसरो द्वारा इनकी छिद्रान्वेषी इन्हें पसंद नही आती । इनके प्रति इनके पतियों का बर्ताव अच्छा नहीं रहता । कन्या संतति ही अधिक रहती है ।

कर्क राशि का अनुभव सिद्ध फलितः

कर्क राशि व्यक्तियों का मुखड़ा एवं शारीरिक ढांचा आकर्षक एवं दूसरों को लभावने वाला होता है । आलस्य, सर्दी–जुकाम, जलभय एवं गृहस्थ जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ता है । हर काम में जल्दबाजी रहती है । सफेद या आसमानी रंग के प्रति इनका आकर्षण रहता है । लेखन एवं वकृत्व कला में प्रवीण होते है । मिठेबोले, क्रोधी, मदिरा–मांस भक्षण करने वाले होते है । स्त्रियों से इन्हे हमेशा बड़ा लाभ होता है । वैवाहिक संबंधो के अतिरिक्त अनेक स्त्रियों से संबंध रहता है । कर्क राशि की महिलाएं व्यभिचारी एवं गुप्त मार्ग से वेश्यावृति करती हुई भी पायी जाती है । डाक्टर, इतिहासज्ञ, राजकीय नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नौसेना के कप्तान, राज्यकर्मचारी, भाषा विशारद एवं अद्भुत वस्तु संग्राहक, वकील के रूप में प्रसि(होते है । आमतौर पर दो तरीको से धन कमाने वाले होते है । मुंह आना, मधुमेह, छाती के रोग, फोडे–फुंसिया आदि से कष्ट सहन करना पड़ता है

प्रतिकूल :

1. प्रतिवर्ष जनवरी मास ।
2. हर महीने की 6, 9, 18, 28 ये तारीखें ।
3. बुधवार ।
4. काला रंग, काले रंग के वस्त्र ।
5. मिथुन, तुला एवं कुंभ राशि के व्यक्ति। उपरोक्त बातें कर्क व्यक्तियों के लिए प्रतिकूल सिद्ध होती है ।

कर्क राशि के व्यक्तियों के जीवन का घटनाक्रम :

कर्क राशि के व्यक्तियों की बगल में या पैरो पर जख्म का व्रण या काला तिल होता है । किसी भी वर्ष का फरवरी महीना, ह मास की 7, 19, 28, 30 ये तारीखें एवं हर सोमवार को शुभ या महतवपूर्ण कार्य करने पर उसमें सफलता मिलती है ।उम्र के 18 से 23 एवं 27 से 35 इस दरमियान विवाह योग बनता है । जन्म के 19वें वर्ष का समय कड़ी मेहनत का रहता है । शिक्षा पूर्ण होती है । 20 वर्ष में नौकरी या व्यवसाय का प्रारम्भ होता है । उम्र के 21 से 36 इस समयावधि में व्यापार, नौकरी, कृषि या कला व्यवसाय में प्रगति होकर भाग्योन्नति होती है । 37 से 52 इस कालखंड में आर्थिक तंगी, कोर्ट–कचहरी, विशेष रूप से फौजदारी मुकदमे में जकड़े जाते है । व्यापार में धोखा, नुकसान जैसी अड़चनें पैदा होती है । अंतिम समय सुखपूर्ण रहेगा।

कर्क व्यक्तियों के लिए विशेष उपासनाः

कर्क राशि या लग्न के व्यक्तियों को शाकिनीजन्य उपद्रवों का कष्ट भोगना पड़ता है । मंदाग्नि, हदयरोग, मधुमेह, सरदर्द, आदि का क्लेश सहन करना पड़ता है । इन कष्टों और व्याधियों से मुक्ति पानें के लिए एवं सभी प्रकार की सुख प्राप्ति के लिए स्वर्णदान, पात्रदान, वस्त्रदान, एवं तंत्रोक्त प(ति से शाकिनी का पूजन करना चाहिये । निम्न मंत्र का रोज 108 बार जाप करें ।

''ऊँ हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरपिय नमः ।''

साथ ही गणेशजी की उपासना भी करें ।

आश्लेष नक्षत्र के चरणों का फलित :

प्रथम चरण : आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा जातक धन – धान्य से संपन्न होता है । स्त्रीवत देह एवं मुखाकृति होती है । सदा प्रसन्न एवं खुश हंसी–मजाक करने वाला, नाना कलाओं में रूचि रखने वाला एवं कलाप्रेमी होता है ।

द्वितीय चरण : आश्लेषा नक्षत्र के द्वितीय चरण से जन्म जातक धर्मिक, तीर्थ–यात्रा में रूचि रखने वाला, यश अनुष्ठान एवं सामाजिक कार्यों में हिस्सा बंटाने वाला परन्तु कुछ दृष्ट प्रवृति का रहात है ।

तृतीय चरण : आलसी, किसी भी बात को गंभीरता से न लेने वाला लड़ाई–झगड़ें एवं मुकदेबाजी से दूर रहने वाला होता है ।

चतुर्थ चरण : आश्लेषा नक्षत्र में चौथे चरण में जन्मा जातक बुरी संगत के कारण बदनाम होने वाला, पतित या विधवा स्त्री से प्रेमरत, धनउडाऊ रहता है ।

रत्नों का रहस्मय संसार

रत्न काम कैसे करते हैं ?

रत्नों को लेकर पुराणों और ग्रंथो में इसका वर्णन किया गया है । सम्रुद मंथन से कई प्रकार के रत्न निकलें सभी लोगों को पता है । और वास्तविक जीवन में प्रत्येक रत्नों का कुछ न कुछ सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव होता है । आखिर ये रत्न काम कैसे करते है इसकी क्या आवधारणा है । ये रत्न धारण करने से पहले जरूर जान लेना चाहिए ।

सूर्य की सात किरणों में पराबैंगनी रंग सबसे घातक होती है । यदि हम माणिक्य रत्न पहनेंगे तो माणिक्य रत्न में यह विशेषता है कि वह पराबैंगनी तत्व को बाहर ही रोक देगा एवं केवल को ही अन्दर प्रविष्ट होने देगा । जिससे व्यक्ति विशेष (धारक) में सूर्य रश्मियों का स्पन्दन–स्पर्श बढ़ेगा एवं रोम–कूपों द्वारा रक्तवाहिनी नाड़ियों के माध्यम से रक्त कणों में सूर्य –शक्ति बढ़ेगी । इससे सूर्यग्रह में संबंधित जो रश्मियां 'माणिक्य रत्न' में हैं, उनका शरीर में प्रवेश हो जाएगा । जो जातक के मन–मस्तिष्क व चिन्तन को प्रभावित करेगा । जिससे सूर्य तत्व अधिक पुष्पित–पल्लवित होगा । इससे धारक का सूर्य–ग्रह सम्बन्धी शुभ फलों की प्राप्ति में वृद्धि होगी । यही विशेषता अन्य ग्रहों से सम्बन्धित रत्नों में पाई जाती है । इसलिए रत्न विज्ञान में अशुभ फलदाता ग्रहों के रत्न धारण की सख्त मनाही है ।

रत्नों का उद्देश्य

प्राचीन काल से ही रत्नों का प्रयोग शृंगारप्रियता, अलंकारिता एवं ऐश्वर्य प्रदर्शन के लिए किया जाता रहा है । रत्नों का विभिन्न प्रभाव देहविज्ञान के अन्तर्गत आयुर्वेद शास्त्र का विषय रहा है । वैद्यक ग्रन्थों में रत्नों की भस्त, पिष्टि (पीसकर बनाया हुआ पाउडर) एवं रसायन क्रिया का प्रयोग असाध्य रोगो की निवृति हेतु हजारों वर्षों से किया जाता रहा है । भावप्रकाश, रसरत्न समुच्चय जैसे आयुर्वेदिक ग्रन्थों में ऐसे अनेक प्रयोग मिलते है ।

रत्नों का अन्तर्मुखी प्रभाव (रश्मिविज्ञान) ज्योतिषियों के विवेचन का विषय रहा है । वराहमिहिर ने आभूषण सौन्दर्य एवं औषधीय गुणों के अतिरिक्त रत्नों की अलौकिक सत्ता व अतिन्द्रिय शक्ति को स्वीकार किया । रत्नपरीक्षाध्याय के प्रारम्भ में ही वे कहते है कि शुभरत्न धारण करने से राजाओं का शुभ, और अशुभ रत्न धारण करने से राजाओं का अशुभ होता है । इसलिए रत्नज्ञों के द्वारा रत्नगत दैव (शुभाशुभफल) की परीक्षा करके ही रत्न धारण करना चाहिए । क्योंकि इसके धारण करने से राजाओं को पुत्र, विजय और आरोग्य की प्राप्ति होती है ।

रत्नों के प्रभाव की विभिन्न मानयताएं

रत्नों में विचित्र शक्ति छिपी होती है, जिनमें प्रमुख एवं सर्वमान्य धारणाएं इस प्रकार है । अम्बर के बारे में यह विश्वास प्रचलित है कि अम्बर के धारण करने से गठिया जैसे रोग ठीक हो जाते है । जर्मनी में अम्बर के दानों की माला इसलिए पहनाई जाती है कि बच्चों के दांत बिना कष्ट के निकलें । तुर्क लोगों में यह मान्यता है कि हुक्के की नली में अम्बर लगा हो तो उस हुक्के में चाहे जितने लोग मुंह लगाएं, कोई–बीमारी नहीं फैलती ।

युनानी लोगो में एमीथिस्ट के सम्बन्ध में मान्यता है कि एमीथिस्ट से बने शराब के प्यालों में शराब पीने से नशा नही चढ़ता। रोम निवासी प्राचीन मूंगे के दाने बच्चों के पालनों में लटका देते थे, जिससे समस्त बालारिष्टों से उनकी रक्षा हो, बुरी नजर से बचाने के लिए मूंगे का ताबजी बड़े महत्व का माना जाता है । चीन में सबसे पहले रोगनिवारक अंगूठियां बनीं, जिनमें घोंघे के लटर जैसे छोटे–छोटे खोल जड़े होते थे और ऐसा विश्वास किया जाता था कि इन्हें पहन कर पेट दर्द, कृमि रोग और नकसीर से छुटकारा पाया जा सकता है ।

भारत में नवजात शिशु को अरिष्ट से बचाने के लिए मोती डालकर चांदी का चन्द्रमा गले में पहनाया जाता है । क्योंकि चन्द्रमा कमजोर होने से सद्यजात बालक एवं उसकी माता की शीघ्र मृत्यु होती है । ज्योतिष शास्त्र में ऐसी धारण है कि चन्द्रमा समस्त नवजात शिशुओं की माता के तुल्य रक्षा करता है ।'

ग्रीक निवासियों में मान्यता है कि नीलम धारण करने से स्त्रियों में अनैतिकता नहीं आती और भूत–पिशाचों का भय भी नहीं रहता । पोप इनोसेन्ट तृतीय ने एक आदेश पारित किया कि नैतिकता को सुदृढ़ रखने के लिए सब पादरी नीलम की अंगूठी धारण करें । यह मान्यता आज भी यथावत है । 'फिरोजा' के विषय में यह मान्यता है कि जब वह अपने रंग को पीला करता है, तो धारक को आने वाली विपति की सूचना दे देता है । यह भी माना जाता है कि यदि कोई किसी स्नेही को फिरोजा भेंट करे तो वह प्राप्तकर्ता के जीवन को सुख–सौभाग्य से भर देता है । ऐसी अने धारणाओं की एक लम्बी श्रृखंला है, जिस पर एक स्वतन्त्र पुस्तक लिखी जा सकती है ।

रत्न धारण के ज्योतिषीय सिद्धान्त

संसार में रत्न धारणप करने के लिए विभिन्न प्रकार की मान्यताएं प्रचलित है तथा रत्नों के धारण करने के भी कुछ विशिष्ट सिद्धान्त है ।

कुछ अनमोल सूत्र इस प्रकार है –

1. ज्योतिष–शास्त्र में जन्मराशि, नामराशि, जन्मदिन, जन्ममास, जन्म–नक्षत्र, जन्म–तिथि को दृष्टिगत रखते हुए रत्न–धारण का निर्देश किया गया है ।

2. रत्न धारण का मुख्य आधार कमजोर ग्रह को पुष्ट करना है । कुछ लोग राशि–रत्न के साथ लग्न स्वामी (लग्नेश) का रत्न भी धारण करवाते है । ऐसा प्रयोग जातक के व्यक्तित्व व आयु को बढ़ाता है ।

3. अलग– अलग कामना को लेकर अलग–अलग प्रकार के रत्न पहनाए जाते है । यथा–संतान हेतु पंचमेश का रत्न, विवाह हेतु सप्तमेश ग्रह क रत्न, भाग्योदय हेतु भाग्येश ग्रह का रत्न व्यापार वृद्धि व नौकरी हेतु लग्नेश एवं दशमेश के रत्न पहनाने की परिपाटी है ।

4. ध्यान रहे कि षष्ठेश, अष्टमेश, द्वादशेश एवं मारकों के रत्न कभी ही पहनाएं जाते ।

5. कई विद्वान महादशा, अन्तर्दश के हिसाब से भी रत्न पहनते है, जो काफी हद तक ठीक भी है ।

6. एक से अधिक रत्न जब भी पहनें, इस बात का पूरा ध्यान रखें कि प्रतिकूल प्रभाव वाले, परस्पर शत्रुराशियें वाले रत्न भी धारण न करें ।

7. पौना वजन वाला रत्न व्यक्ति को पौना कर देता है, अतः रत्न हमेशा सवाया वजन वाला ही ज्योतिषी के परामर्श से धारण करें । यथा–सवा चार रत्ती, सवा पांच कैरेट, सवा नौ रती इत्यादि ।

8. रत्न धारण हमेश सम्बन्धित ग्रह की धातु में ही पहनना चाहिए । यथा – मोती चांदी में, माणिक्य सुवर्ण में, मंगल तांबे में, शनि त्रिलोह में इत्यादि।

9. रत्न हमेश सम्बन्धित ग्रह की अंगुली में ही पहनना चाहिए, जैसे पुखराज (गुरू की अंगुली) तर्जनी में, शनि मध्यमा में, माणिक्य सूर्य की अंगुली (अनामिका) में, पन्ना (बुध की अंगुली) कनिष्ठिका में पहनना चाहिए।

10. रत्न हमेशा विधिविधान से प्राणप्रतिष्ठत करवा कर, शुभ दिन, मुहूर्त एवं शुभ समय में आशीर्वादपूर्वक धारण करने पर निश्चय ही काम करते है ।

अ. रत्न धारण का शास्त्रीय विधान

रत्नों के भस्म, अवलेह एवं पिष्टी के विध प्रयोगो के द्वारा आयुर्वेद में तो रत्नों की सार्थकता एवं उपयोगिता स्पष्टतः प्रमाणित है, परन्तु ज्योतिष में रत्नों की सार्थकता, रत्नों का प्रयोग, रत्नों के धारण का विधान, रत्न चिकित्सक के उदाहरण व दृष्टान्तों पर बहुत कम साहित्य लिखा गया । इसलिए इस विषय पर व्यावहारिक विश्लेषण आवश्यक है ।

1. जहां तक संभव हो, रत्न सर्वशुद्ध एवं स्वच्छ खरीदें एवं ज्योतिष मापदंड के हिसाब से खरीदें, जौहरी लोग दागदार एवं दूषित रत्नों को कम मूल्य में ग्राहक को देते है । अतः रत्न खरीदकर ज्योतिषी को अवश्य बताना चाहिए ।

2. रत्न हमेश शुभ मुहूर्त एवं शुभ समय में खरीद कर घर में लाया जाता है । यह ध्यान रखा जाता है कि सम्बन्धित रत्न, सम्बन्धित ग्रह के वार को ही लाया जाए । यथाः– मोतीः– सोमवार, माणिक्यः– रविवार, मूंगा :– मंगलवार, पन्ना :– बुधवार, पुखराजः– गुरूवार, हीराः– शुक्रवार एवं नीलम :– शनिवारी को ही खरीदा जाता है ।

3. कई लोग रत्नों की शुभाशुभ अनुकूलता की जांच हेतु कुछ दिन तक रत्न अपने पास रखते है । इस हेतु संबंधित रत्न एक सप्ताह तक, उसी ग्रह के वर्णानुसार रेशमी वस्त्र में लपेट कर, मन्त्र पूरित करके दाईं भुजा में धारण करें तो एक सप्ताह में ही उसका (रत्न) का परीक्षण हो जाता है । यथाः– माणिक्य रविवार से रविवार (एक सप्ताह) तक लाल रेशमी वस्त्र में लपेट कर, दाई भुजा में बांधें । इसी प्रकार नीच पहनना अभीष्ट हो तो शनिवार से शनिवार तक नीले रेशमी वस्त्र में धारण करें । हमारे मित्र रत्न को दो–तीन दिन तक तकिए के नीचे रखकर सोने की सलाह देते है ।

4. रत्न चाहें अंगूठी में जड़वाना हो या गले के हार में, या फिर भुजा में बांधना हो, उसे पीछे से हमेश खुला रखें । उसे इस तरह से पहना जाए कि उसकी रश्मियां शरीर की त्वचा को स्पर्श कर सकें ।

5. रत्न पहनने से पूर्व उसे कच्चे दूध व गंगाजल में डुबो कर रखना चाहिए। उसे पुष्प, चन्दन, धूप व दीप की भावना देकर पवित्र करना चाहिए।

6. रत्न धारण करने में नक्षत्र की प्रधानता विशेष मानी गई है । जिसमें 'पुष्य नक्षत्र' श्रेष्ठ कहा गया है । रत्न से सम्बन्धित वार को यदि पुष्य–नक्षत्र हो तो सर्वश्रेष्ठ फलदायी कहा गया है। यथाः– माणिक्य–सूर्य पुष्य, पुखराज–गुरू–पुष्य, हीरा–शुक्र –पुष्य एवं नीलम–शनि–पुष्य को अभिषेक करवाकर अभिमन्त्रित करें।

7. इसके अतिरिक्त यह जरूरी है कि रत्न से सम्बन्धित ग्रह का मन्त्रजाप शास्त्रानुसार करके रत्न को उस ग्रह की शक्ति से मन्त्रपूरित करना चाहिए । यथाः– माणिक्य को 7,000 सूर्य मन्त्राों, मोती को 11,000 चन्द्र मन्त्रों, मूंगा को 10,000 भौम मन्त्रों, पन्ना को 6,000 बुधमन्त्रों, नीलम 23,000 शनिमंत्रों, गोमेद को 18,000 राहुमन्त्रों, वैदूर्य (लहसुनिया) को 17,,000 केतु मन्त्रों से मन्त्रपूरित करना चाहिए ।

8. ध्यान रहे, बिना प्राण–प्रतिष्ठा के मन्त्र निर्जीव पत्थर ही है । इसलिए धारकको अपने नाम, कुल व गोत्रनुसार रत्न को अपने पक्ष में अभिमन्त्रित करना चाहिए, तभी रत्न उस व्यक्ति विशेषा के लिए काम करने लगेंगे । यही शास्त्रीय विधान है ।

कालसर्प दोष और उपाय

कालसर्प योग मुख्यत : बारह प्रकार के माने गये है । आगे सभी भेदो को उदाहरण कुंडली प्रस्तुत करते हुए समझाने का प्रयास किया गया है ।

अनन्त कालसर्प योग :–

जब जन्मकुंडली में राहु लग्र में व केतु सप्तम में हो और उस बीच हमारे ग्रह हों तो अनन्त नामक कालसर्प योग बनता है । राहु जब लग्न में हो तो जातक धनवान होता है, बलवान होता है साथ–साथ बहुत दृढ़ निष्चयी और साहसी होगा। हां इतना जरूर मैंने देखा है कि उसकी पत्नी का स्वास्थ्य हमेशा प्रतिकूल रहता है । परन्तु व अपने पुरूषार्थ से अच्छी सफलता पाते है ।

उपाय :

सूर्योदय के बाद तांबे के पात्र में गेहूं, गुड़, भर कर बहते जल में प्रवाह करें ।

संतान कष्ट हो तो काला और सफेद कम्बल गरीब को दान करें ।

अनुकूलन के उपाय :–

1. प्रतिदिन एक माला ऊँ नमः शिवाय मंत्रा का जाप करें । कुल जाप संख्या 21 हजार पूरी होने पर शिव का रूद्राभिषक करें ।

2. कालसर्पदोष निवारक यंत्रा घर में स्थापित करके उसका नियमित पूजन करें।

3. नाग के जोड़े चांदी के बनवाकर उन्हे तांबे के लौटे में रख बहते पानी में एक बार प्रवाहित कर दें ।

4. प्रतिदिन स्त्रानोपरांत नवनागस्तोत्रा का पाठ करें ।

5. राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्बा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें ।

6. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें ।

7. श्रावण मास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें ।

8. शनिवार का व्रत रखते हुए हर शनिवार को शनि व राहु की प्रसन्नता के लिए सरसों के तेल में अपना मुंह देखकर उसे शनि मंदिर में समर्पित करें ।

कुलिक कालसर्प योग

राहु दूसरे घर में होा और केतु अष्टम स्थान में हो और सभी ग्रह इन दोनों ग्रहों के बीच में हो तो कुलिक नाम कालसर्प योग होगा । इस भाव में राहु हमेषा जातक को दोहरे स्वभाव का बनाता है । अत्याधिक आत्मविष्वास के कारण अनेकों प्रकार की परेशानियों का सामना इन्हें करना पड़ता है । प्रियजनों का विरह झेलना पड़ता है । कई बार इस जातक को पाइल्स की शिकायत भी देखी गई है । कारण की केतु अष्टम स्थान में है । परन्तु एक बात मैने देखी है कि केतु यहां पर मेष, वृष, मिथुन, कन्या और वृश्चिक राशि में हो तो जातक के पास धन की कमी नही होती है ।

उपाय :

चांदी की ठोस गोली सफेद धागे में हमेशा गले में धारण करें । केंसर का तिलक लगाना भी आपके लिए शुभ होगा ।

अनुकूलन के उपाय :–

1. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विविधत उपासना करें ।
2. देवदारू, सरसों तथा लोहवान को उबालकर उस पानी से सवा महीने तक स्नान करें ।
3. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें ।

वासुकी कालसर्प योग

राहु तीसरे घर में और केतु नवम स्थान में और इस बीच सारे ग्रह ग्रसित हों तो वासुकी नामक कालसर्प योग बनता है । यदि तीसरे भाव में राहु और नवम भाव में केतु तो जातक के पास धन–दौलत और वैभव की कोई कमी नहीं रहती । स्त्री सुख अनुकुल रहता है । साथ ही मित्र भी हमेशा सहयोग के लिए तैयार रहते है । परंतु अपने से छोटे भाईयों से इनका हमेशा विरोध रहता है । परन्तु पिता से अच्छी निभती है और पिता का आज्ञाकारी पुत्र भी होता है । तृतीय भाव में राहु हो तो ऐसे व्यक्ति धर्म के माध्यक से धन अर्जित करते है और बहुत ही प्रसिद्ध होते है । विदेश यात्रा करते है, व देश विदेश में यश प्राप्त करते है

उपाय

चवल, दाल और चना बहते पानी में प्रवाह में करें । साथ ही मकान के मुख्य द्वार पर अंदर–बाहर तांबे का स्वस्तिक या गणेश जी मूर्ति टांग दे ।

अनुकूलन के उपाय :–

1. नव नाग स्तोत्रा का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें ।
2. प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्रा में उड़द या मूंग एक मुठ्ठी डालकर, राहु का मंत्रा जप का भिक्षाटन करने वाले को दे दें । यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न हो प्रवाहित करें । 72 बुधवार तक करने से अवश्य लाभ मिलता है ।
3. महामृत्युंजय मंत्रा का 51 हजार जप राहु, केतु की दशा अंतर्दशा में करें या करवायें ।
4. किसी शुभ मुहूर्त में नाग पाश यंत्रा को अभिमंत्रित कर धारण करें ।
5. शुक्ल पक्ष के पथम शनिवार से व्रत प्रारंभ कर 18 शनिवारों तक व्रत करें और काला वस्त्रा धारण कर 18 या 3 मालाा राहु के बीज मंत्रा का जाप करें । फिर एक बर्तन में जल दुर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में चढ़ाएं । भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेव़डी तिल के बने मिठे पदार्थ सेवन करें और यही वस्तुएं दान भी करें । रात में घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें । नाग पंचमी का व्रत भी अवश्य करें ।
6. नित्य प्रति हनुमान चालीसा का 11 बार पाठ करें और हर शनिवार को लाल कपड़े में आठ मुठ्ठी भिंगोया चना व ग्यारह केले सामने रखकर हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें और उन केलों को बंदरो को खिला दें और प्रत्येक मंगलवार को हुनमान जी के मंदिर में बूंदी के लड्डू का भोग लगाएं और हनुमान जी की प्रतिमा पर चमेली के तेल में धुला सिंदूर चढाऐं । ऐसा करने से वासुकी काल सर्प योग के समस्त दोषों की शंति हो जाती है ।
7. श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्त्रानोपरांत 11 माता ऊँ नमः शिवाय मंत्रा का जन करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें ।

शंखपाल कालसर्प योग

राहु चौथे स्थान में और केतु दशम स्थान में हो इसके बीच सारे ग्रह हो तो शंखपाल नामक कालसर्प योग बनता है । यदि राहु यहा उच्च को हो शुभ राशि वाला हो तो सभी सुखों से परिपूर्ण होता है । और जातक की कुंडली में शुक्र अनुकूल हो तो विवाह के बाद कारोबार और धन में वृद्धि होती है । साथ ही यदि चन्द्रमा लग्न में हो तो आर्थिक तंगी कभी नही रहती । इस जातक को 48 वर्ष की आयु में बृहस्पति का उतम फल प्राप्त होता है । परन्तु फिर भी सफलता के लिए इन्हे विघों का सामना करना पड़ता है । लेकिन केतु दशम भाव में मेष, वृष, कन्या और वृश्चिक राशि में है तो और भी उतम फल प्राप्त होता है एवं शत्रु चाह कर भी हानि नहीं पहुंचा सकता । चतुर्थ में राहु व दशम में केतु हो तो ऐसे व्यक्ति राजनिति में उतार चढ़ाव रहते हुए राजनिति में अच्छी सफलता पाते है । जैसे मुलायम सिंह जी, चौधरी चरण सिंह । ऐसे व्यक्तियों को दूसरे साथीयों से न चाहते हुए भी सहयोग प्राप्त होता है ।

उपाय

गेंहू को पीले कपड़े में बांध कर जरूरतमंद व्यक्ति को दान दें । 400 ग्राम धनियां बहते पानी में प्रवाह करें।

अनुकूलन के उपाय

1. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चांद का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें ।
2. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें ।
3. शुभ मुहूर्त में सूखे नारियल के फल को जल में तीन बार प्रवाहित करें ।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. 18 शनिवार व्रत करें और राहु, केतु व शनि के साथ हनुमान की आराधना करें । लसनी, सुवर्ण, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूम्रवस्त्रा, धूम्रपुष्प, नारियल, कंबल, बकरा, शस्त्रा आदि एक बार दान करें ।

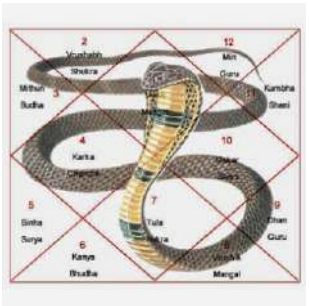

पद्म कालसर्प योग

राहु पंचम व केतु एकादश भाव में तथा इसी बीच सारे ग्रह हों तो पद्म कालसर्प योग बनता है । पंचम भाव में राहु व ग्यारहवें भाव में केतु अध्यात्म की ओर प्रेरित करता है । उतम परिवार वाला, आर्थिक स्थिति मजबूत साथ ही उतम गुणा एवं भोग से युक्त होता है । केतु ग्यारहवें घर में सम्पूर्ण सिद्धि व सफलता प्राप्त कराता है परन्तु इस योग में संतान पक्ष थोड़ा कमजोर रहता है । साथ ही जातक अपने भाइयों के प्रति थोड़ा कलहकारी होता है । 21 या 42 की अवस्था में पिता को थोड़े कष्ट की सम्भावना रहती है । यह जातक आर्थिक दृष्टि से बहुत मजबूत होता है, समाज में मान–सम्मान मिलता है और कारोबार भी ठीक रहता है यदि यह जातक अपना चाल–चलन ठीक रखें, मध्यपान न करें और अपने मित्र की सम्पति को न हड़पे तो उपरोक्त कालसर्प प्रतिकूल प्रभाव लागू नहीं होते है । पंचम में राहु व एकादश में केतु हो तो ऐसे व्यक्ति सफल राजनितिक होते है । ऐसे व्यक्तियों को उतार चढ़ाव आते है । परन्तु सफलता व यश अच्छा प्राप्त होता है । अधिकतर बड़े राजनितिज्ञों में यह कालसर्प योग पाया जाता है । जैसे नारायाण दत्त तिवारी, राम विलास पासवान, शीला दिक्षित, शंकर राव चौहान आदि के जीवन से आप सब परिचित है । क्योंकि यह भाव पूर्व जन्मों से सम्बंधित होते है पंचम और एकादश यह दोनो भाव ऐसे है राहु केतु कहीं भी बैठें हमेशा अच्छी ही सफलता मिलती है । ऐसे व्यक्तियों को उदर (पेट) के माध्यम से शरीरिक कष्ट आता है ।

उपाय

रात को सोते समय सिरहाने पांच मुलियां रखें और सवेरे मंदिर में रख आएं । संतान सुख के लिए दहलीज के नीचे चांदी की पतर रखें ।

अनुकूलन के उपाय –

1. किसी शुभ मुहूर्त में एकाक्षी नारियल अपने ऊपर से सात बार उतारकर सात बुधवार को गंगा य यमुना जी में प्रवाहित करें ।
2. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएं।
3. शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें
4. नित्य प्रति हनुमान चालीसा पढ़ें और भोजनालय में बैठकर भोजन करें।
5. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चांदी का स्वस्तिक एवं दोनों ओर धातु से मिर्मित नाग चिपका दें ।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें ।

महापद्म कालसर्प योग

राहु छठें भाव में और केतु बारहवें भाव में और इसके बीच सारे ग्रह अवस्थित हों तो महापद्म कालसर्प योग बनता है । इस योग में राहु को छठें स्थान में बहुत ही प्रशस्त अनुभव किया गया है । सम्पति, वाहन, दीर्घायु, सर्वत्र विजय, साहसी, बहादुर और उच्च प्रवाह का होता है । लोगो को बहुत सहयोग करता है । यहां तक की फांसी के फंदे से बचा कर लाने की क्षमता होती है । परंतु स्वयं कभी निरोग नहीं रहता। अनेको प्रकार की बिमारियों का सामना करना पड़ता है । यदि जातक को सट्टे या जुए की आद लग जाए तो बर्बाद हो जाता है । आंखों की बिमारी से दूर रहना चाहिए। राहु छठें में और केतु द्वादश मं हो तो ऐसे व्यक्ति धर्म से जुड़े होते है सभी प्रकार की प्रतिस्पर्धा में अच्छी सफलता पाते हैं तथा दान पुण्य और दूसरों की मदद में अपना सब कुछ लुटाने को ततपर रहते है । जैसे पं. जवाहर लाल नेहरू ।

उपाय

गणेश जी की उपासना सर्वमंगलकारी सिद्ध होगी ।

अनुकूलन के उपाय –

1. श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें ।
2. शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से शनिवार व्रत आरंभ करना चाहिए । वह व्रत 18 बार करें । काला वस्त्रा धारण करके 18 या 3 राहु बीज मंत्रा की माला जपें । तदन्तर एक बर्तन में जल, दुर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें । भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवाड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें । रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ के पास रख दें ।
3. इलाहाबाद (प्रयाग) में संगम पर नाग–नागिन की विधिवत पूजन कर दूध के साथ संगम में प्रवाहित करें एवं तीर्थराज प्रयाग में संगम स्थान में तर्पण श्राध्य भी एक बार अवश्य करें ।
4. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुंदरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें ।

तक्षक कालसर्प योग

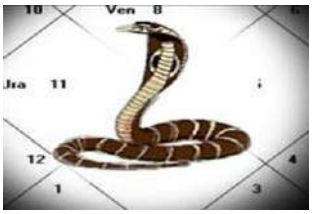

केतु लग्न में और राहु सप्तम में हो तो तक्षक नाम कालसर्प योग बनता है ।इस योग में जातक बहुत ही उच्चे सरकारी पदों पर काम करता है । सुखी, परिश्रमी और धनी होता है । वह अपने पिता से बहुत ही प्यार करता है और साथ ही बहुत ही प्यार करता है और साथ ही बहुत सहयोग करता है । लक्ष्मी की कोई कमी नहीं होती है लेकिन जातक स्वयं अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने वाला होता है । यदि अपनी संगत अच्छे लोगों के साथ रखें तो अच्छा रहेगा। गलत संगत की वजह से परेशानी भी आ सकती है । यदि यह जातक अपने जीवन में एक बार करें कि अपना भलाई न सोच कर ओरों का भी हित सोचना शुरू कर दें साथ ही अपने मान–सम्मान के दूसरों को नीचा दिखाना छोड़ दें तो उपरोक्त समस्याएं नहीं आती ।

उपाय

11 नारियल बहते पानी में प्रवाह करें।

अनुकूलन के उपाय –

1. कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें ।
2. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएं ।
3. देवदारू, सरसों तथा लोहवान–इन तीनों को उबालकर एक बार स्नान करें ।
4. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में मसूर की दाल सात बार प्रवाहित करें और उसके बाद लगातार पांच मंगलवार को व्रत रखते हुए हनुमान जी की प्रतिमा में चमेली में घुला सिंदूर अर्पित करें और बूंदी के लड्डू का भोग लगाकर प्रसाद वितरित करें । अतिम मंगलवार को सवा पांच सिंदूर सवा हाथ लाल वस्त्रा औश्र सवा किलों बताशा तथा बूंदी के लड्डू का भोग लगाकर प्रसाद बांटे ।

कर्कोटक कालसर्प योग

केतु दूसरे स्थान में और राहु अष्टम स्थान में कर्कोटक नाम कालसर्प योग बनता है । इस योग में जातक उदार

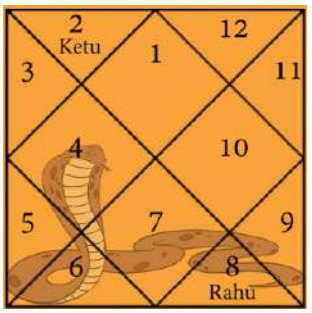

मन, समाज सेवी और धनवान होता है । परंतु वाणी पर संयम कभी नही रहता । साथ ही परिवार वालों से कम ही पटती है । साथ ही अपने कार्यों को बदलते रहता है । पिक्षा में समस्या आती है । साथ ही जातक हमेशा निंदा का पात्र होता है ।

उपाय

चांदी का चकोर टुकरा हमेश अपनी जेब में रखें ।

अनुकूल के उपाय–

1. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें और पांच मंगलवार का व्रत करते हुए हनुमान जी को चमेली के तेल में घुला सिंदूर व बूंदी के लड्डू चढाएं ।
2. काल सर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित कर उसका प्रतिदिन पूजन करें और शनिवार को कटोरी में सरसों का तेल लेकर उसमें अपना मुंह देख एक सिक्का अपने सिर पर तीन बार घुमाते हुए तेल में डाल दें और उस कटोरी को किसी गरीब आदमी को दान दे दें अथवा पीपल की जड़ में चढ़ा दें ।
3. सवा महीनें तक जौ के दाने पक्षियों को खिलाएं और प्रत्येक शनिवार की चीटियों को शक्कर मिथित सत्तू उनके बिलों पर डालें ।
4. अपने सोने वाले कमरे में लाल रंग के पर्दे, चादर व तकियों का प्रयोग करें ।
5. किसी शुभ मुहूर्त में सूखे नारियल के फल के बहते जल में तीन बार प्रवाहित करें तथा किसी शुभ मुहूर्त में शनिवार के दिन बहते पानी में तीर बार कोयला भी प्रवाहित करें ।

शंखचूड़ कालसर्प योग

केतु तीसरे स्थान में वह राहु नवम स्थान में शंखचूड नामक कालसर्प योग बनता है । इस योग में जातक दीर्घायु, साहसी, यपस्वी और धन–धान्य से परिपूर्ण होता । दाम्पत्य सुख बहुत ही अनुकूल रहता है । सर्वत्र विजय और सम्मान पाता है । परन्तु इस जातक का चित हमेशा अस्थिर रहता है ।

उपाय

राहु और केतु के बीज मंत्रो का जाप करें ।

अनुकूल के उपाय–

1. इस काल सर्प योग की परेशानियों से बचने के लिए संबंधित जातक को किसी महीने के पहले शनिवार से शनिवार का व्रत इस योग की शंति का संकल्प लेकर प्रारंभ करना चाहिए और उसे लगातार 18 शनिवारों का व्रत रखना चाहिए । व्रत के दौरान जातक काला वस्त्रा धारण करके राहु बीज मंत्रा की तीन या 18 माला जाप करें । जाप के उपरांत एक बर्तन में जल, दुर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें । भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, रेवड़ी तिलकूट आदि मीठे पदार्थो का उपयोग करें । उपयोग के पहले इन्ही वस्तुओं का दान भी करें तथा रात में घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें ।
2. महामृत्युंजय कवच का नित्य पाठ करें और श्रावण महीने के हर सोमवार का व्रत रखते हुए शिव का रूद्राभिषेक करें ।
3. चांदी या अष्टधातु का नाग बनवाकर उसकी अंगूठी हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करें । किसी शुभ मुहूर्त में अपने मकान के मुख्य दरवाजें पर चांदी का स्वस्तिक एवं दोनों ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें ।

घातक कालसर्प योग

केतु चतुर्थ तथा राहु दशम स्थान में हो तो घातक कालसर्प योग बनाते है । इस योग में जातक परिश्रमी, धन संचयी व सुखी होता है । राजयोग का सुख भोगता है । दशम राहु राजनीति में अवष्य सफलता दिलाता है । मनोवांछित सफलताएं मिलती है । यदि शनि अनुकूल बैठा हो तो । परन्तु जातक हमेशा अपनी जन्मा भूमि से दूर रहता है । माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहता है । सब कुछ होने के बाद भी जातक के पास अपना

सुख नही होता है ।

उपाय

हर मंगलवार का व्रत करें और 108 हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अनुकूलन के उपाय –

1. नित्य प्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें व प्रत्येक मंगलवार का व्रत रखें और हनुमान जी को चमेली के तेल में सिंदूर घुलाकर चढाएं तथा बूंदी के लड्डू का भोग लगाएं ।
2. एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें ।
3. शनिवार का व्रत रखें और लहसुनियां, सुवर्ण, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, काला वस्त्रा, काला फूल, छिलके समेत सूखा नारियल, कंबल व हथियार आदि का समय –समय पर दान करते रहें ।
4. नागपंचमी के दिन व्रत रखें और चांदी के नाग की पूजा कर अपने पितरों का स्मरण करें और उस नाग को बहते जल में श्रध्दापूर्वक विसर्जित कर दें ।
5. शनिवार कार व्रत करें और नित्य प्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें । मंगलवार के दिन बंदरों को केला खिलाएं और बहते पानी में मसूर की दाल सात बार प्रवाहित करें ।

विषधर कालसर्प योग

केतु पंचम और राहु ग्यारहवें भाव में हो तो विषधर कालसर्प योग बनाते है । इस योग में जातक 24 वर्ष की अवस्था के बाद सफलता प्राप्त करता है । आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी । ग्यारहवें भाव में राहु हमेशा अनुकूल फल प्रदान करता है। । उचित व अनुचित दोनों तरीकों से धन की प्राप्ति होती है । दाम्पत्य सुख बहुत ही अनुकूल रहता है । संतान सुख की कोई कमी नहीं रहती । परंतु प्रथम संतान को अवष्य कष्ट मिलता है ।

उपाय

घी का दीपक जला का दुर्गा कवच और सिद्कुंजिका स्तोत्र का पाठ करें

अनुकूलन के उपाय–

1. श्रावण मास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें ।
2. नागपंचमी को चांदी के नाग की पूजा करें, पितरों का स्मरण करें तथा श्रद्धापूर्वक बहते पानी या समुद्र में नागदेवता का विसर्जन करें ।
3. सवा महीने देवदारू, सरसों तथा लोहवान–इन तीनों को जल में उबालकर उस जल से स्नान करें ।
4. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें । ऐसा केवल सोलह सोमवार तक करें ।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएं ।

शेषनाग कालसर्प योग

केतु छठे और राहु बारहवें भाव में हो तथा इसके बीच सारे ग्रह आ जाये तो शेषनाग कालसर्प योग बनता है । इस योग में जातक हमेशा अपनी मेहनत और सूझ–बूझा से सफलता हासिल करता है । परंतु बहुत जरूरी है अपने आचरण को संयमित रखना । संतान पक्ष प्रबल होता है । दीर्घायु होता है । परन्तु ननिहाल पक्ष से हमेशा खटपट लगी रहती है ।

उपाय

काले और सफेद तील बहते जल में प्रवाह करें । किसी भी मंदिर में केले का दान करें ।

अनुकूलन के उपाय–

1. किसी शुभ मुहूर्त में ऊँ नमः शिवाय की 11 माला जाप करने के उपरांत शिवलिंग का गाय के दूध से अभिषेक करें और शिव को प्रिय बेलपत्रा आदि सामग्रियां श्रद्धापूर्वक अर्पित करें । साथ ही तांबे का बना सर्प विधिवत पूजन के उपरांत शिवलिंग पर समर्पित करें ।
2. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें और मंगलवार के दिन हनुमान जी की प्रतिमा पर लाल वस्त्रा सहित सिंदूर, चमेली का तेल व बताशा चढ़ाएं ।
3. किसी शुभ मुहूर्त में मसूर की दाल तीन बार गरीबों को दान करें ।
4. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाने के बाद ही कोई काम प्रारंभ करें ।
5. काल सर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके उसकी नित्य प्रति पूजहा करें और भोजनालय में ही बैठकर भोजन करें अन्य कमरों में नही
6. किसी शुभ मुहूर्त में नागपाश यंत्रा अभिमंत्रित कर धारण करें और शयन कक्ष में बेडशीट व पर्दे लाल रंग के प्रयोग में लायें ।
7. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर अष्टधातु या चांदी का स्वस्तिक लगाएं और उसके दोनो ओर धातु निर्मित नाग चिपका दें तथा एक बार देवदारू, सरसों तथा लोहवान इन तीनों का उबाल कर स्नान करें ।

4. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाने के बाद ही कोई काम प्रारंभ करें ।
5. काल सर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके उसकी नित्य प्रति पूजहा करें और भोजनालय में ही बैठकर भोजन करें अन्य कमरों में नही
6. किसी शुभ मुहूर्त में नागपाश यंत्रा अभिमंत्रित कर धारण करें और शयन कक्ष में बेडशीट व पर्दे लाल रंग के प्रयोग में लायें ।
7. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर अष्टधातु या चांदी का स्वस्तिक लगाएं और उसके दोनो ओर धातु निर्मित नाग चिपका दें तथा एक बार देवदारू, सरसों तथा लोहवान इन तीनों का उबाल कर स्नान करें ।

शनि के विभिन्न पाय का

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार किसी भी व्यक्ति की जन्म राशि से शनि जिस भी भाव में गोचर कर रहा होता है । उसके अनुसर शनि के पाया अर्थात पाद फल विचार किया जाता है । व्यक्ति की जन्म कुण्डली से शनि पाया के फलों का विस्तार से अध्ययन किया जाता है ।

जन्म राशि के अनुसार शनि पाया की शुभता या अशुभता का निर्धारण निम्न रूप से किया जाता है । जब शनि गोचर में किसी व्यक्ति की जन्म राशि से 1, 6, 11 भाव में भ्रमण करते है, तो शनि के पाद स्वर्ण के माने जाते है । उसी तरह जब शनि किसी व्यक्ति की जन्म राशि से 2, 5, 9 वें भाव में गोचर करते है तो शनि के पाद ताम्र के माने जाते है और जब शनि किसी व्यक्ति की जन्म राशि से 4, 8, 12 वें भाव में भम्रण करते है, तो शनि के पाद लोहे के माने जाते है ।

शास्त्रोक्त विधान से शनि पाया की अवधि में मिलने वाले सामान्य फल :

1. सोने का पाया की अवधि के फल

सोने का पाया की अवधि में में व्यक्ति को कई प्रकार के सुख– साधन प्राप्त होने की सम्भावनाएं अधिक बनती है । आर्थिक द्रष्टी से धन व समृद्धि की वृद्धों के लिये भी यह समय व्यक्ति के अनुकुल होता है ।

2. चांदी का पाया की अवधि के फल

रजत का पाया की अवधि व्यक्ति को शुभ फल देने वाली मानी गई है । अवधि में व्यक्ति को सब प्रकार की भौतिक सुख–सुविधाएं प्राप्त होती है ।

3. तांबे का पाया की अवधि के फल

शनि के गोचर की तांबे का पाया की अवधि व्यक्ति को मिले–जुले फल प्रदान करने वाली होती है । इस अवधि में व्यक्ति को जीवन के कई क्षेत्रों में सफलता प्राप्त होती है । इस अवधि में व्यक्ति को कुछ क्षेत्रों में असफलता का भी सामना करना पड़ सकता है ।

4. लोहे का पाया की अवधि के फल

शनि गोचर की लोहे का पाया की अवधि में व्यक्ति को आर्थिक मामलों में हानि हो सकती है । नौकरी, व्यवसाय के लिये भी यह समय प्रतिकुल रहने की अधिक संभावनाएं बनती है । इस अवधि में व्यक्ति को स्वास्थय सुख में कमी हो सकती है ।

जन्म राशि से विभिन्न भावों में शनि के फल :

1. प्रथम भाव में शनि स्वर्ण पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि अर्थात प्रथम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का सोने का पाया कह जाता है । सोने के पाये में शनि व्यक्ति के स्वास्थ्य सुख को बढ़ाता है । परंतु व्यक्ति को संतान से कष्ट हो सकता है । व्यक्ति के लम्बे समय से रूके हुए कार्य पूरे होते है, व्यक्ति को नौकरी व व्यवसायीक कार्यो से लाभ प्राप्त होता है । किन्तु शिक्षा क्षेत्र में बाधाएं बनी रह सकती है

2. द्वितीय भाव में शनि रजत पाया विचार

गोरचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि द्वितीय भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का रजत का पाया कहा जाता है । रजत के पाये में शनि व्यक्ति को नौकरी–व्यवसाय के कार्यो में सफल्ता प्राप्त होती है । आर्थिक मामलों में सुधार होता है । भूमि–भवन–वाहन इत्यादि से लाभ प्राप्त होता है । इस समयावधि में इष्ट मित्रों व पारिवारीक सदस्यों का सहयोग प्राप्त होता है । व्यक्ति के मान–सम्मान में वृद्धि होती है ।

3. तृतीय भाव में शनि ताम्रपाद पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि तृतीया भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का ताम्र का पाया कहा जाता है । ताम्र पाया में शनि व्यक्ति को धर्मिक कार्यो में रूचि बढ़ाता है । यदि पढाई कर रहे तो उच्च शिक्षा प्राप्ति सम्भावनायें अधिक होती है । नौकरी में उन्नति व व्यापार में वृद्धि हो सकती है । अपने बल–बुद्धि से शत्रुओं को पराजित करने में सफलता प्राप्त हो सकती है । दाम्पत्य जीवन तानवपूर्ण हो सकता है । आकस्मिक दुर्घटनाएं भी हो सकती है ।

4. चतुर्थ भाव में शनि लौहे पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि चतुर्थ भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का लौंहे का पाया कहा जाता है । लौह पाया में नौकरी–व्यवसाय के कार्यो में अत्याधिक बाधाएं और नुक्शान हो सकता है । उसके रोजगार का स्त्रोत एकाधिक बार बदलता रहता है । लौह पाया में मानसिक तनाव बढ़ने की संभावनाएं अधिक बनती है । परिवार में कलह की अधिकता होती है । व्यक्ति के मान–सम्मान की हानि हो सकती है ।

5. पंचम भाव में शनि रजत पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि पंचम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का रजत का पाया कहा जाता है । रजत पाया में नौकरी–में उन्नति व्यापार में वृद्धि हो सकती है । जातक के घर में मंगलकार्य सम्पन्न होते है । इस अवधि में अधिकतर शुभ फल अधिक प्राप्त होते है । अपने विरोधि व शत्रु को परास्त करने में व्यक्ति सफल रहता है । लेकिन दांम्पत्य सुख में कमी हो सकती है ।

6. छठे भाव में शनि स्वर्ण पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि छठें भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का स्वर्ण का पाया कहा जाता है । स्वर्ण पाया में जातक को शुभ फलो की प्राप्ति होती है । नौकरी–व्यवसाय के कार्यो में अधिक लाभ प्राप्त होते है । व्यक्ति के मान–सम्मान में वृद्धि होती है । एक से अधिक स्तोत्र से धन लाभ केयोग बनते है । भूमि–भवन–वाहन के सुख में वृद्धि होती है ।

7. सप्तम भाव में शनि ताम्र पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि सप्तम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का का ताम्र का पाया कहा जाता है । ताम्र पाया में व्यक्ति के भौतिक सुख–साधनों में वृद्धि होने के योग बनते है । लेकिन व्यक्ति को मानसिक तनाव बना रहता है । जातक के जीवन साथी के स्वास्थ्य में गिरावट हो सकती है ।

8. अष्टम भाव में शनि लोहे पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि अष्टम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का लौहे का पाया कहा जाता है । लौह पाया में व्यक्ति के कष्टों में बढोतरी हो सकती है । परिवारिक सदस्यों के बिच में आपसी तनाव व मतभेद बढने की अधिक संभावना होती है । आकस्मिक घटनाओं के कारण व्यक्ति की परेशनियां बढ सकती है । मान–सम्मान में कमी हो सकती है । कर्ज के कारण परेशानी संभव है ।

9. नवम भाव में शनि रजत पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति जन्म राशि नवम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को को शनि का रजत का पाया कहा जाता है । रजत पाया में व्यक्ति की आर्थिक स्थिती में सुधार होता है । एकाधिक स्त्रोत से धन लाभ प्रात होता है । व्यक्ति के पुराने शत्रु भी परास्त होते है ।

10. दशम भाव में शनि ताम्र पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि दशम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का ताम्र का पाया कहा जाता है । ताम्र पाया में व्यक्ति को अत्याधिक परिश्रम के उपरांत सफलता प्राप्त होती है । लम्बे समय से चली आरही योजनाएं भी पूर्ण हो सकती है । व्यक्ति को इस अवधि मं अपने लक्ष्यों के प्रति सचेत रहना चाहिए । कभी–कभी आलस्य के भाव

प्रगति में बाधाएं डाल सकते है ।

11. एकादश भाव में शनि स्वर्ण पाया विचार

गोचर में जब शनि की जन्म राशि एकादशम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का स्वर्ण का पाया कहा जाता है । स्वर्ण पाया में व्यक्ति को सभी प्रकार के भौतिक सुख साधन प्राप्त होते है । कार्य क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है । धन–सपंति में वृद्धि होती है । मान सम्मान व पद–प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है ।

12. द्वादश भाव में शनि लौहे पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि द्वादश भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि क लौहे का पाया कहा जाता है । लौह पाया में व्यक्ति के अपने सगे–संबंधियों से अधिक खर्च व कर्ज से परेशानी संभव है । अनावश्यक किसी कार्यो में झूठें आरोप लग सकते है । मानसिक अस्थिरता रह सकती है । दूरस्थ स्थानों की यात्रा संभव है ।

शनि प्रदोष व्रत का महत्व

सनातन धर्म में प्रदोष व्रत का विशेष महत्व माना जाता है । प्रत्येक माह के शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षों के तेरहवें दिन अर्थात त्रयोदशी को प्रदोष व्रत कहा जाता है ।

इस दिन किए जाने वाले व्रत को प्रदोष व्रत कहा जाता है । प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव और माता पार्वती की आरधना करने का विधान है ।

विद्वानों के मतानुसार प्रदोष व्रत से व्यक्ति को सफलता, शान्ति प्रदान करने वाला एवं उसकी समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने वाला है ।

ऐसी धार्मिक मान्यता है कि प्रदोष के दिन भगवान शिव के किसी भी रूप का दर्शन करने मात्र से व्यक्ति की सारी अज्ञानता का नाश कर देता है और भक्त का शिव की कृपा का भागी बनाता है ।

जब शनिवार के दिन प्रदोष व्रत पड़ता है, तो उसे शनि प्रदोष व्रत के नाम से जाना जाता है । शनिदेव नवग्रहों में से एक महाग्रह है । शनिदेव के बारे में शास्त्रों में वर्णन है कि शनि का कोप अत्यन्त भयंकर होता है । भंयकर कोप शान्त करने हेतु पुराणों में उल्लेख है की शनि प्रदोष व्रत करने से शनि देव का प्रकोप स्वतः शान्त हो जाता है ।

जिन लोगों पर शनि की साढ़ेसाती और ढैया का प्रभाव हो, उनके लिए शनि प्रदोष व्रत करना विशेष हितकारी माना गया है ।

पूर्ण विधि–विधान व निष्ठा से किया गया प्रदोष व्रत शनिदेव की कृपा प्राप्त करने का एक शास्त्रोक्त व आसान उपाय है । प्रदोष व्रत के प्रभाव से शनि से संबंधित पीडा दूर होती है । और शनिदेव का अशीर्वाद भी मिलता है जिससे व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूरी होती जाती है ।

शनि प्रदोष के दिन शनि की कारक वस्तुओं जैसे लोहा, तैल, काले तिल, काली उडद, कोयला और कम्बल आदि का दान करना शुभ फलप्रद होता है, और शनि–मंदिर में जाकर तैल का दिया जलाता है तथा उपवास करता है शनिदेव उससे प्रसन्न होकर उसके सारे दुखों को दूर कर देते है ।

विद्वानों के अनुसार शास्त्रों में वर्णित है कि उतम संतान की कामना रखने वाले दम्पति को शनि प्रदोष व्रत अवश्य करना चाहिए । शास्त्रों में शनि प्रदोष व्रत शीघ्र ही संतान देने वाला माना गया है ।

संतान–प्राप्ति के हेतु शनि प्रदोष वाले दिन सुबह स्नानादी करने के पश्चात पति–पत्नी को मिलकर शिव–पार्वती और गणेश की का विधि–विधान से पूजन–अर्चन करना चाहिए और शिवलिंग पर जलाभिषेक करना चाहिए। इसके पश्चयात शनिदेव की कृपा प्राप्त करने हेतु पीपल के वृक्ष की जड में जल चढ़ाना चाहिए। साथ ही दम्पति को पूरे दिन उपवास करना चाहिए । ऐसा करने से जल्दी ही संतान की प्राप्ति होती ।

शनि प्रदोष व्रत के दिन सधाक को संध्या–काल में भगवान का भजन–पूजन करना चाहिए और शिवलिंग का जल और बिल्व की पतियां से अभिषेक करना चाहिए । साथ ही इस दिन महामृत्युंजय–मंत्र के जाप का भी विधान है । इस दिन प्रदोष व्रत कथा का पाठ करना चाहिए और पूजा के बार भभूत को मस्तक पर लगाना चाहिए । शास्त्रों के अनुसार जो साधक इस तरह शनि प्रदोष व्रत का पालन करता है उसके सभी कष्ट समाप्त हो जाते है और सम्पूर्ण इच्छाएं पूरी होती है ।

शनिग्रह से संबंधित रोग

उन्माद नाम को रोग शनि की देन है। जब दिमाग में सोचने विचारने की शक्ति का नाश हो जाता है। जो व्यक्ति करता जा रहा है। उसे करता जाता है। उसे यह पता नहीं है कि वह जो कर रहा है। संसार के लोगों के प्रति उसके क्या कर्तव्य है। उसे पता नहीं होता। सभी को एक लकडी से हांकने वाली बात उसके जीवन में मिलती है। मानव वध करने में नही हिचकना। शराब और मांस का लगातार प्रयोग करना। जहां भी रहना आंतक मचाये रहना। जो भी सगे सम्बन्धी हैं। उनके प्रति हमेश चिन्ता देते रहना आदि उन्माद नाम के रोग केक लक्षण है।

वात रोग का अर्थ है वायु वाले रोग जो लोग बिना कुछ अच्छा खाये पिये फूलते चले जाते है। शरीर में वायु कुपित हो जाती है। उठना बैठना दूभर हो जाता है । शनि यह रोग देकर जातक को एक जगह पटक देता है। यह रोब लगातार सट्टा, जुआ, लाटरी, घुडदौड़ और अन्य तुरंत पैसा बनाने वाले कामों को करने वाले लोगों में अधिक देखा जाता है। किसी भी इस तरह के काम करते वक्त व्यक्ति लम्बी सांस खींचता है। उस लम्बी सांस के अन्दर जो हारने या जीतने की चाहत रखने पर ठंडी वायु होती है वह शरीर के अन्दर ही रूक जाती है। और अंगो के अन्दर भरती रहती है। अनैतिक काम करने वालों ओर अनाचार काम करने वालों के प्रति भी इस तरह के लक्षण देखे गये है।

भगन्दर रोग गुदा में घाव या न जाने वाले फोड़े के रूप में होता है। अधिक चिन्ता करने से जो भी खाया जाता है। वह आंतो में जमा होता रहता है। पचता नहीं है। ओर चिन्ता करने से उवासी लगातार छोड़ने से शरीर में पानी की मात्रा कम हो जाती है। मल गांठो के रूप में आमाशय से बाहर कडा होकर गुदा मार्ग से लब बाहर निकलता है तो लौह पिण्ड की भांति गुदा क छेद की मुलायम दीवाल को फाड़ता हुआ निकलता है। लगातार मल का इसी तरह से निकलने पर पहले से पैदा हुए घाव ठीक नहीं हो पातें हैं। और इतना अधिक संक्रमण हो जाता है, कि किसी प्रकार की एन्टीबायटिक काम नहीं कर पाती है।

गठिया रोग शनि की ही देन है। शशीलन भरे स्थानों का निवास । चोरी और डकैती आदि करने वाले लोग अधिकतर इसी तरह का स्थान चुनते है। चिन्ताओं के कारण एकान्त बंध जगह पर पड़े रहना। अनैतिक रूप से संबंध करना। शरीर में जितने भी जोड़ है। रज या वीर्य स्खलित होने के समय वे भयंकर रूप से उत्तेजित हो जाते हैं। धीरे–धीरे शरीर का तेज खत्म हो जाता है। और जातक के जोड़ो के अन्दर सूजन पैदा होने के बाद जातक को उठने बैठने और रोज के कामों को करनें में भयंकर परेशानी उठानी पड़ती है। इस रोग को देकर शनि जातक को अपने द्वारा किये गये अधिक वासना के दुष्परिणामों की सजा को भुगतवाता हैं।

स्नायु रोग क कारण शरीर की नशें पूरी तरह से अपना काम नहीं कर पाती हैं। वह आंखों के अन्दर कमजोरी महसूस करता हैं। सिर की पीडा, किसी भी बात का विचार करते ही मुर्छा आजाना मिर्गी, हिस्टीरिया, उत्तेजना। भूत का खेलने लग जाना आदि इसी कारण से ही पैदा होता है। अगर लगातार शनि के बीज मंत्र का जान जातक से करवाया जाय। उड़द की दाल का प्रयोग करवाया जाय। रोटी में चने का प्रयोग किया जाय । लोहे के बर्तन में खाना जायें। तो इस रोग से मुक्ति मिल जाती है इन रोगों के अलावा पेट के रोग , जंघाओ के रोग, टीबी, कैंसर आदि रोग भी शनि की देन है।

शनि–साढ़ेसाती के शांति उपाय

→" इस मंत्र का जप प्रतिदिल 107 बार करने से लाभ प्राप्त होता है।

→ श्री शिवलिंग पर ताँबे का सर्प ; नाग द्ध चढ़ाने से शनि साढ़ेसाती का अशुभता में कमी आती है।

→ आक के पौधे पर सात शनिवार तक लोहे की सात कील चढ़ाने से लाभ प्राप्त होता हैं।

→ किसी मंदिर में काले रंग की वस्तुएं एवं सात बादाम सात शनिवार तक लगातार दान करने से शनि की साढ़ेसाती में शनि से संबंधित कष्ट दूर होते हैं।

→ हनुमान की पूजा–अर्चना करने से हनुमानजी की प्रतिमा को सिंदूर व तेल चढ़ाने से लाभ प्राप्त होता हैं।

→ शनिवार का व्रत करने से भी शनि के अशुभ प्रभावों में कमी आती हैं।

→ शनिवार को किसी हनुमान जी की प्रतिमा को सिंदूर चमेजी का तेल, चांदी केक वर्क का चोला चढ़ाए। हनुमानजी को जनेऊ , लाल फूल की माला, लड्डु तथा पान अर्पण करने से साढ़ेसाती से संबंधित कष्टो से छुटकारा मिलता हैं।

→ सप्तधान अर्थात सात प्रकार के अन्न कर दान करने से शनिवार को प्रातः पीपल का पूजन कर पीपल के मूल में जल अर्पल करने से भी विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

→ स्नान करते समय लाजवन्ती, लौंग, लोबान, चौलाई, काला तिल, गौर, काली मिर्च, गंगरैला, कुल्थी, गौमूत्र आदि में से पांच या सात या

उस्से अधि वस्तु जो भी प्राप्त हो उसका चुर्ण बना कर को जल मे मिलाकर दक्षिण दिशा की और मुख कर के खड़े होकर स्नान करें। इस जल से स्नान करने के पश्चात् किसी भी तरह का साबुन या तेल का प्रयोग नहीं करें। इसी जी को शरीर पर डालने से पूर्व साबुन आदि लगले व शु(पाने से झाग को साफ करने के पश्चयात औषधि मिले जल से स्नान किया जा सकता हैं।

→ शनिवार के दिन शनि से संबंदित वस्तुएं जैसे काले उड़द, तेल काले तिल का लोहे से बनी वस्तु, श्याम वस्त्र आदि का दान देने से शनि पीड़ा का शमन होता हैं।

→ एक सूख नारियल लेकर उसमें चाकू या किल से छोटा सा गोल छेद बना लें। इस छेद में नारियल में आटे का बूरा, बादाम, काजू किशमिश, पिस्ता, अखरोट या छुआरा मिलाकर नारियल में भरें। नारियल को पुनः बन्द कर किसी पीपल के पास भूमि के अन्दर इस प्रकार गाड़ दें की चीटियां आसानी से तलाश लें, किन्तु अन्य जानवर न पा सकें। घर लौटकर हाथ–पैर धोकर घर में प्रवेश करें। इस प्रकार 7 शनिवार तक यह क्रिया सम्पन्न करने से शनि पीडाका शमन होता हैं।

→ शविलिंग पर कच्चा दूध चढ़ाते हुए " अमोघ शि कवच " का पाठ करने से शनि पीडा शांत होती हैं।

→ प्रत्येक शनिवार को मछलियों को जौ के आटे से बनी गोलियाँ खाने को डालने से लाभ प्राप्त होता हैं।

→ प्रतिदिन शनि वज्रपंजर कवच, दशरथ–कृत–शनि–स्तोत्र अथवा शनैश्चरस्तवराजः का नियमित पाठ करने से लाभ प्राप्त होता हैं।

→ भोजन कने से पूर्व परोसी गयी थाली मेंसे एक ग्रास निकालकर काले कुत्ते को खिलाएँ अथवा शनिवार को शाम के समय उड़द की दाल के पकौड़े व इमरती कुत्ते को खिलाए।

शनि की कृपा प्राप्ति के सरल उपाय

1. शास्त्रों में शनि देव को वृद्धावस्था का स्वामी कहा गया है । जो व्यक्ति अपने माता पिता व बुजुर्गा का सम्मान करता है उस व्यक्ति पर शनि देव बहुत प्रसन्न होते है । जो व्यक्ति अपने माता–पिता व बुजुर्गा का अपमान उस व्यक्ति पर शनिदेव का कोप हो जाता है व उस व्यक्ति से सुख–समृद्धि दूर चली जाती है ।

2. निर्धनों व असहाय जीवों की सहायता करने से शनिदेव प्रसन्न होते है । असहाय व्यक्ति को काला छाता, चमड़े के जूते चप्पल भेट करने से शनि देव प्रसन्न होते है ।

3. शनि देव का उडद के लड्डू बहुत प्रिय है । अत शनिवार को लड्डू का भोग लगा का बॉटना लाभप्रद होता है

4. शनिवार के दिन तेल से मालिश कर स्नान करना चाहिए ।

5. लोहे कि कोई वस्तु शनि मंदिर में दान करनी चाहिए, ऐसी वस्तु दान करे जो मंदिर में कमा आसके ।

6. शनि से उत्पन्न समस्या के समाधान के लिए भगवान शिवजी और हनुमान जी की पूजा एक साथ करना विशेष लाभप्रद होता है । शनिदेव को शांत करने के लिये शनि चालीसा, हनुमान चालीसा, बजरंगबाण हनुमान बाहुक का पाठ करना शुभदायक होता है ।

7. शनिरत्न नीलम के साथ पन्ना भी धारण करने से लाभ होता है ।

8. मछलियों को आटें से बनी गोलियां खिलायें ।

9. हर शनिवार व मंगलवार को काले कुते को मीठी रोटीया खिलायें ।

10. श्री हनुमान जी या शनि मंदिर में पीपल का पेड़ हो तो संध्या के समय दीपक जलाना शनि, हनुमान और भैरवजी के दर्शन अत्यंत लाभकारी है

11. शनिवार का व्रत करे तथा एक समय बिना नमक का भोजन ले ।

12. खाली पेट नाश्ते से पूर्व काली मिर्च चबाकर गुड या बताशे से खाएं।

13. भोजन करते समय नमक कम होने पर काला नमक तथा मिर्च कम होने पर काली मिर्च प्रयोग करें ।

14. भोजन के उपरांत लोंग खाए ।

15. शनिवार मंगलवार को क्रोध न करें ।

16. भोजन करते समय मौन रहे ।

17. प्रत्येक शनिवार को सोते समय शरीर व नाखूनों पर तेल मसले ।

18. मांस, मछली, मद तथा नशीली चीजो को सेवन बिल्कुल न करे ।

19. गुड व चने से बनी वस्तु भोग लगाकर अधिक से अधिक लोगो को बॉटना चाहिए ।

20. लोहे के बर्तन में तेल भरकर अपना चेहरा देखकर दान करदें । यदि दान हेतु योग्य पात्र न मिले तो उसमें बती लगाकर उसे शनि मंदिर में जला देना चाहिए ।

21. प्रत्येक शनि अमावस्या को अपने वजन का दशांश सरसों के तेल का अभिषेक करना चाहिए ।

22. शनि मृत्युंजय स्त्रोत दशरथ कृत शनि स्त्रोत का 40 दिन का नियमित पाठ करे ।

23. घोड़े की नाल अथवा नाव की कील से बना छल्ला अभिमंत्रित करके धारण करना शनि के अशुभ प्रभाव को कम करता है ।

24. अपने निवास स्थान व व्यवसायीक स्थान पर घोड़े की नाल को **U** आकार में अवश्य लगाये ।

19. गुड व चने से बनी वस्तु भोग लगाकर अधिक से अधिक लोगो को बॉटना चाहिए ।

20. लोहे के बर्तन में तेल भरकर अपना चेहरा देखकर दान करदें । यदि दान हेतु योग्य पात्र न मिले तो उसमें बती लगाकर उसे शनि मंदिर में जला देना चाहिए ।

21. प्रत्येक शनि अमावस्या को अपने वजन का दशांश सरसों के तेल का अभिषेक करना चाहिए ।

22. शनि मृत्युंजय स्त्रोत दशरथ कृत शनि स्त्रोत का 40 दिन का नियमित पाठ करे ।

23. घोड़े की नाल अथवा नाव की कील से बना छल्ला अभिमंत्रित करके धारण करना शनि के अशुभ प्रभाव को कम करता है ।

24. अपने निवास स्थान व व्यवसायीक स्थान पर घोड़े की नाल को **U** आकार में अवश्य लगाये ।

राहु केतु का राशि परिवर्तन

राहु केतु का राशि परिवर्तन 23 सितम्बर 2020 को वृषभ राशि में राहु और वृश्चिक राशि में केतु का परिवर्तन होगा ।

राहु का राशिपरिवर्तन का प्रत्येक 18 माह में होता है । कुछ विद्वानों इसकों मिथुन और कुछ राहु को वृषभ में उच्चता मानते है । राहु एक क्रूर और पृथकारी छाया ग्रह है । इसके राशि परिवर्तन से जबरदस्त राजनीतिक हलचल बदलेगी। राहु का राजनी ति का कारक और शनि का गुप्तचर माना जाता है । जबकि केतु को मंगल की परछाई और मोक्ष का कारक मानते है । अमृत मंथन के समय राहु ने अमृत पान अपना वेश बदलकर किया था । और जब सूर्य और चन्द्र देव को इसका पता चला तब इन देवताओं ने विष्णु देव को बताया और बाद में विष्णु जी ने सुदर्शन चक्र से इसके दो भाग कर दिये । और ज्योतिष में इन छाया ग्रह का महत्वपूर्ण योगदान है, इसक हर लग्न और राशि पर निम्न प्रभावों देखने को मिलेगा ।

राहु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से द्वितीय स्थान अर्थात धन कुटुम्ब और वाणी के स्थान पर हो रहा है । और अपने मित्र शुक्र की राशि में जाने से जातक के पास आक्समात धन से संबंधित कुछ कष्ट और परिवार में कुछ क्लेश उत्पन्न कर सकता है । परन्तु राहु अचानक से धन देने वाला ग्रह माना जाता है । अतः धन के सदर्भ में वृद्धि होगी और शेयर, सट्टा, लॉटरी से भी धन अर्जित करेगा, इसकी पांचवी दृष्टि रोग पर अपने मित्र की राशि में पड़ने के कारण आक्समात वायु रोग उत्पन्न हो सकता है । जबकि इसकी सातवीं दृष्टि अपने परम शत्रु मंगल के घर में पड़ने के कारण कुछ मसीबतों के बाद ही जातक धन अर्जित कर पायेगा । नवम दृष्टि से अपने मित्र शनि के साथ नव पंचम योग बनायेगा । अतः राजनैतिक सफलता मिलना और व्यापार संबंधित परेशानियों को दूर करता हुआ वृद्धि प्राप्त करेगा । वैवाहिक जीवन में कुछ विशेष परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है ।

केतु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से अष्टम में होगा । इस कारण तो कई बार जाताको को मृत्युतुल्य कष्ट का सामना करना पड़ेगा और पैतृक संबंधित धन की हानि भी प्राप्त होगी आठवें स्थान का संबंध पेट के निचले हिस्से से भी होता है इसलिए किसी भी प्रकार की बिमारी या शिकायत रहेगी और जीवन यापन करने के संबंध में कष्ट का अनुभव करना होगा ।

राहु का राशि परिवर्तन आपके लग्न में मित्र शुक्र की राशि में हो रहा है इस लिये शरीरिक सुन्दरता और स्वास्थ्य के प्रति कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और जातक चिंतत रहेगा और गुप्त चतुराई के बल से बड़ा नाम सम्मान प्राप्त कर लेगा । सत्य असत्य की परवाह न करते हुए अधिक स्वार्थी और अपने आप को सही सिद्ध करने में समय वयतीत करेगा शरीर में किसी कार्य की कोई कमी महसूस राशि परिवर्तन के बाद जातको में दिखेगा और बहुत सारी दिक्कतें सहने के बाद शरीर में हिम्मत प्राप्त करेगा और व्यक्तित्व उन्नति करने के लिए बड़ी भारी युक्ति से काम करेगा । इसके विपरीत केतु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से सातवें स्थान आर्थात आपके जीवनसाथी के स्थान पर हो रहा है । केतु की उपस्थिती मंगल के राशि में बैठने के कारण गृहस्थ के संचालन मार्ग में दिक्कतें रहेंगी और रोजगार में भी जातक को कठिनाई का अनुभव करना पड़ेगा । यहां तक कि पति – पत्नी के बीच में मतभेद के कई स्थितिया उत्पन्न हो सकती है । और अंत में केतु जातक को स्थिर करके राशि परिवर्तन करेगा ।

राहु का राशि परिवर्तन मिथुन लग्न से बारहवें स्थान पर हो रहा है । और ये अपने मित्र शुक्र की राशि में प्रवेश करेगा । इसलिये गुप्त योजनाओं द्वारा चतुराईयों के साथ सफल बनकर खर्च की संचालन शक्ति को प्राप्त करेगा, और इसी प्रकार बाहरी स्थानों में कुशलता पूर्वक कार्य संपादन करेगा जातक का पूरा सूय खर्च को कैसे कम किया जाएं इसमें वक्त लगेगा । राहु की पांचवी दृष्टि अपने मित्र बुध की राशि में पड़ने के कारण भूमि, वाहन, मकान का क्रय–विक्रय के योग बनेंगे जिससे जातक सन्तुष्ट रहेगा । राहु की सातवीं दृष्टि से परम शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में पड़ने के कारण रोग में कमी देखने को मिलेंगी । और नवम दृष्टि से शनि के साथ नव पंचम योग बनाकर गुप्त धन भी कमायेगा केतु का राशि परिवर्तन रोग, ऋृण और शत्रु से मुक्ति दिलायेगा परन्तु कार्य स्थल पर स्थान परिवर्तन औश्र राजनैतिक साजिश मै जातक को फंसा सकता है गले में किसी प्रकार के रोग की सम्भावना बढायेगा ।

राहु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से एकादश स्थान पर अपने मित्र शुक्र की राशि में परिवर्तन करेगा । और इस कारण से आक्समात कोई बड़ा धन मिल जाना और फंसे हुये धन का भी निवारण करवऐगा यद्यिप राहु के स्वाभविक गुणों के कारण आमदनी के मार्ग में कुद परेशानियां जरूरी रहेंगी । परन्तु एकादश स्थान पर क्रूर ग्रह अत्यधिक बलवान हो जाते है । इसलिये लाभ और मुनाफें की वृद्धि करेगा । इस प्रकार राहु का राशि परिवर्तन धन के संचार में अत्याधिक प्रभावी प्रमाण देगा । केतु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से पंचम त्रिकोण एवं विद्या स्थान पर शत्रु मंगल की राशि में होगा इसलिए प्रेम प्रसंग में कुछ दिक्कते प्राप्त होगी और बुद्धि विद्या के स्थान पर कुछ कमी का अनुभव कराऐगा ।

राहु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से दशम केन्द्र स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है इसलिए रोजगार और व्यापार में कुछ झंझट या परेशानी प्राप्त करेगा और कारोंबार के उन्नति के मार्ग में कुछ रूकावटे भी उत्पन्न होगी किंतु शुक्र की राशि के होने के कारण विशेष गहरी युक्तियों के योग से अंनन्त अपने व्यापार को बडा लेगा केतु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से चौथे के स्थान अर्थात माता के स्थान में शत्रु मंगल की राशि में जाने के कारण माता के साथ कुछ वैचारिक मतभेद हा जाएगा और भूमि, वाहन, मकान के संधर्भ में भी कठिन परिश्रम करना पडेगा । गुप्त शक्ति के बल से सुख का अनुभव करेगा । और कभी–कभी घरेलू वातावरण में गहरी अशांति के योग बनेंगे ।

कन्या लग्न में राहु का राशि परिवर्तन आपके लग्न भाव से नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म के स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर होने जा रहा है । अतः भाग्य के क्षेत्र में जातक कुछ परेशानियों का अनुभव करेगा । और भाग्य के बाहरी हिस्से से जितनी उन्नति पायेगा उतनी ही कमजोरी अन्दररूनी तौर से जातक को सहना पड़ेगा भाग्य स्थान में कभी कभी भारी संकट उत्पन्न हो सकता है किन्तु चतुराई धैर्य की शक्ति से पुनः भाग्यदोय कर पायेगा । केतु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में शत्रु मंगल की राशि में होने के कारण भाइ बहनों में कुछ अनबन हो सकती है । परन्तु तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह अत्याधिक शक्तिशाली होने के कारण अन्दर आत्मविश्वास के कारण कभी हिम्मत नहीं हार पायेगा ।

राहु का राशि परिवर्तन आपके लग्न भाव से अष्टम स्थान अर्थात आयु के स्थान पर होने वाला है अतः आयु का खतरा हमेश बरकारर रहेगा किन्तु शुक्र की राशि में बैठने के कारण आयु वृद्धि का योग भी प्राप्त कर लेगा । उदर में कुछ शिकायतें रहेंगी और पैथृक संपत्ति कं योग भी बनेंगे । परन्तु दूसरे मार्ग से जीवन को सहायक बनानें वाली शक्तियों का लाभ गम्भीर योजनाओं द्वारा प्राप्त कर लेगा । केतु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से दूसरे धन सथान में एवं कुटुम्ब स्थान में शुक्र मंगल की राशि में होने वाला है ।
इसलिए धन के संचार में बड़ी कमी रहेगी और कुटुम्ब में भी संबंध अच्छा नहीं रहेगा धर्म के लिए कठिन कर्म का प्रयोग करेगा क्योंकि केतु मंगल की राशि में उपस्थित रहेगा इसलियें धन की परेशनियां बराबर बनेगी इसके बाद भी जातक हिम्मत के साथ जीवन निर्वाह कर पायेगा ।

राहु का राशि परिवर्तन आपके लग्न भावों से सातवें स्थान पर जीवन साथी, रोजगार में मित्र शुक्र की राशि में परिवर्तन करेगा इसलिए जीवनसाथी के साथ वाद–विवाद और रोजगार के स्थान में बहुत दिक्कतों के बाद जातक जीवन निर्वाह कर पायेगा और इसके लिए कई बार चतुराई और छल क ा भी सहारा जातक लेगा । रोजगार के मार्ग में भी और गृहस्थ जीवन के संदर्भ में भी कुछ कमी का अनुभव रहेगा । केतु का राशि परिवर्तन आपके लग्न भाव में शत्रु मंगल की राशि में होने के कारण शरीर में कई जगह चोट लगने की सम्भावनाा बनेगी और शरीरिक सुन्दरता और मानसिक स्थिति दोनों में कमी का अभाव रहेगा । सौभाव में गर्मी ज्यादा रहेगी इसलिये दिमाग की शक्ति में जातक को कमजोरी और थकावट का अनुभव मिलेगा ।

आपकी कुंण्डली में राहु राशि परिवर्तन आपके लग्न से छठें स्थान में मित्र शुक्र की परिवर्तन करेगा छठवें घर में क्रूर ग्रह बलवान हो जाते है इसलिए शत्रु स्थान में विशेष प्रभाव रखेगा और गुप्त युक्ति बल के द्वारा शत्रु पक्ष को परासत कर देगा प्रत्येक्ष में बड़ी हिम्मत शक्ति से काम लेगा और शरीर के रोगा और ऋृण भी खत्म होंगे । केतु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से बारहवें स्थान में शत्रु मंगल की राशि में होगा इसलिए खर्च की अधिकता जातक प्राप्त करेगा और मानसिक चिंता के योग से बाहरी स्थानों से विरोधाभास का अनुभव करायेगा ।

राहु का राशि परिवर्तन आपके लग्न से पांचवे त्रिकोण विद्या में मित्र शुक्र की राशि में होने जा रहा है इसलिए जातक को संतान पक्ष में दिक्कतें आएगी और विद्या ग्रहण के संदर्भ में भी कुछ परेशानियां रहेगी परन्तु मित्र शुक्र की राशि में होने के कारण चतुराई के फल स्वरूप दिमागी शक्ति का प्रभाव रखेगा और विशेष परेशानीयां रहेगी । केतु का राशि परिवर्तन आपके लग्न भाव से ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु मंगल की राशि में होना है । एकादश स्थान पर क्रूर ग्रह अत्याधिक शक्तिशाली हो जाते है । और यह ग्रह गरम स्वभाव का होने के कारण आमदनी के मार्ग में जातक को कठिन परिश्रम करना पड़ेगा परन्तु इसका सकारत्मक प्रभाव जातक को जल्दी मिलेगा ।

राहु का राशि परिवन्रन आपके लग्न से चतुर्थ स्थान में मित्र शुक्र की राशि में होगा । अतः माता के सुख संबंधो में कष्ट और भूमि, वाहन, मकान के सुख में कमी रहेगी । घरेलू वातावरण में कुछ अशांति प्राप्त होंगे परन्तु मित्र शुक्र की राशि में बैठने के कारण सुख सुविधाऐं प्राप्त कर लेगा । केतु का राशि परविर्तन आपके लग्न भाव से दशम स्थान में शत्रु मंगल की राशि में होगा । अतः राज –समाज में परेशानीयों के कारण व्यापार और कर्म में कठिनाईयों का अनुभव प्राप्त होगा। अपनी आंतरकि स्थिति के दायरे में कुछ ऐसी कमजोरी पायेगा जिसके कारण गुप्त दुख का अनुभव करेगा परन्तु उत्साह पूर्वक उन्नति के मार्ग में लगा रहेगा ।

आपकी कुंण्डली में राहु का राशि परिवर्तन आपके लग्न भाव से तृतीय स्थान पर मित्र मंगल की राशि में होगा । इसलिए पराक्रम में बहुत शक्ति प्राप्त होगी राहु स्वाभिक गुण के कारण भाई–बहन के संबंधो में कुछ अनबन की स्थिति हो सकती है । परन्तु जातक अपने पुरूषार्थ के बल पर सफलता प्राप्त कर लेगा और कभी भी हिम्मत हारने को तैयार नहीं होगा ।
केतु का राशि परिवर्तन आपके लग्न
से नवम त्रिकोण अर्थात भाग्य एवं धर्म स्थान में शत्रु मंगल की राशि में होगा । अतः भाग्य की स्थान में जातक परेशानी एवं कष्ट अनुभव करेगा । परन्तु ग्रह गरम मंगल की राशि में बैठा केतु अत्याधमिक भाग्योन्नति भी करयेगा ।

Kundali expert
For Better Future
How to Join
"ASTROLOGY COURSE "

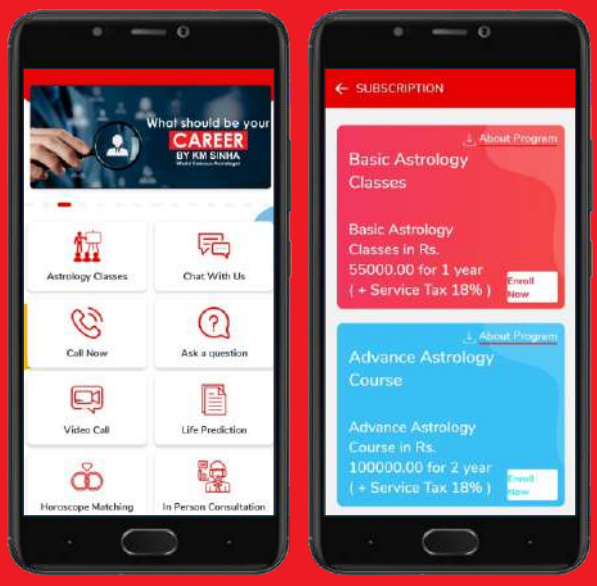

Get Information
Broucher
WEEKEND CLASSES
Only Through Mobile APP
Download KUNDALI EXPERT Mobile APP
GET IT ON Google Play
Available on the App Store

सितम्बर महीने में त्योहार/व्रत

रवि SUN	**विवाह-मुहूर्त** इस मास में विवाह मुहूर्त का आभाव है	शुद्ध अश्विन कृष्ण 4 **6** श्री दधिचि जयंती राधाष्टमी व्रत	शुद्ध अश्विन कृष्ण 11 **13** श्राद्ध पक्ष शुरू	अ. अश्विन शुक्ल 4 **20**	अ. अश्विन शुक्ल 11 **27** मासिक शिवरात्रि
सोम MON		शुद्ध अश्विन कृष्ण 5 **7**	शुद्ध अश्विन कृष्ण 12 **14**	अ. अश्विन शुक्ल 5 **21**	अ. अश्विन शुक्ल 12 **28** सर्वपितृ अमावस्या
मंगल TUE	भाद्रपद शुक्ल 14 **1** हरितालिका तीज वहार जयंती	शुद्ध अश्विन कृष्ण 6 **8**	शुद्ध अश्विन कृष्ण 13 **15**	अ. अश्विन शुक्ल 6 **22**	अ. अश्विन शुक्ल 13 **29** शारदीय नवरात्रि शुरू
बुध WED	भाद्रपद शुक्ल 15 **2** गणेश चतुर्थी	शुद्ध अश्विन कृष्ण 7 **9** एकादशी व्रत	शुद्ध अश्विन कृष्ण 14 **16**	अ. अश्विन शुक्ल 7 **23** मातृनवमी श्राद्ध	अ. अश्विन शुक्ल 14 **30**
गुरू THU	शुद्ध अश्विन कृष्ण 1 **3** श्रृषि पंचमी व्रत	शुद्ध अश्विन कृष्ण 8 **10** वामन जयंती	अश्विन कृष्ण 30 **17** विश्वकर्म पूजा	अ. अश्विन शुक्ल 8 **24**	**मूल-विचार** ता. 4 रेवती से रात्रि 11/28 से ता. 6 अश्विनी रात्रिशेष 5/24 तक । ता. 14 आश्लेषा दिन 3/52 से ता. 16 मघा । दिन 12/21 तक । ता. 22 ज्येष्ठा सायं 7/19 से ता. 24 मूल सायं 6/10 तक ।
शुक्र FRI	शुद्ध अश्विन कृष्ण 2 **4** बलदेव षष्ठी महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	शुद्ध अश्विन कृष्ण 9 **11** प्रदोष व्रत	अधिक अश्विन शुक्ल 1 **18**	अ. अश्विन शुक्ल 9 **25** इंदिरा एकादशी व्रत	
शनि SAT	शुद्ध अश्विन कृष्ण 3 **5** संतान सप्तमी	शुद्ध अश्विन कृष्ण 10 **12** अनंत चतुर्दशी	अ. अश्विन शुक्ल 2/3 **19**	अ. अश्विन शुक्ल10 **26** प्रदोष व्रत	**पंचक-विचार** ता. समय मासारम्भ से 5 रात्रि2/21 तक। 28 दिन9/41 से मासान्त तक।

क्या सुशांत सिंह राजपूत को मिलेगा न्याय?

By Astrologer KM SINHA

14 जून 2020 को सुशांत सिंह राजपूत की हत्या या आत्महत्या हुई ये अभी भी एक प्रश्न चिन्ह बना हुआ है । इनकी जीवनी का अध्ययन करने पर पता चलता है ये कि पवित्र रिश्ता में दमोदर देशमुख थे । और फिल्म काय पो चै के ईशान भट्ट और अन्त में इनको सफलता जिससे सबसे बड़ी सफलता कहेंगे 2016 में प्रदर्शित भारतीय किक्रेट कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी के एम.एस.धोनी द अनटोलड स्टोरी से जबरदस्त उन्नति प्राप्त किया। पटना के राजीव नगर इलाके में सेन्ट कारेंस हाई स्कूल में पढ़ाई की थी और 2004 में हंसराज मॉडल स्कूल दिल्ली से कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग की पढ़ाई की । आपके सभी परीक्षाओं को उत्तीण किया और भौतिक शास्त्र में नेशनल ओलम्पियाड भी जिता, ऐसी जबरदस्त व्यक्तित्व होने के बाद कोई व्यक्ति इतने आकस्मात समय में आत्महत्या क्यों करेगा ?

हालाकि ये अभी पहेली बनी हुई है। और इनके कुण्डली का अध्ययन ज्योतिषचार्य के.एम. सिन्हा ने अपने चैनल यू टूयूब पर भी किया है हालाकि की जन्म समय को लेकर अभी भी अनिश्चिता बनी हुई है । इनका जन्म 21 जनवरी 1986 में पटना में हुआ था, जन्म समय पुण्यतया सही नही होने के कारण इनके सूर्य और चन्द्र कुण्डली का अध्ययन करना ज्यादा सटीक भविष्यवाणी प्रदान करेगा ।

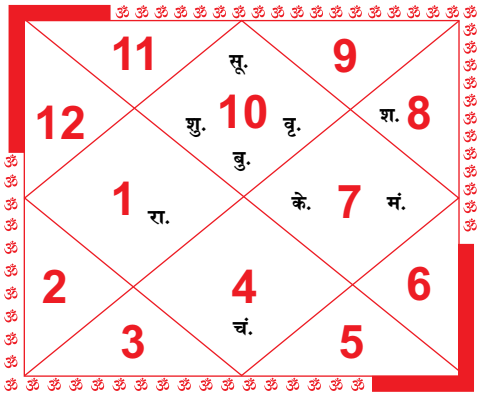

सुशांत सिंह राजपूत की सूर्य कुण्डली

किसी जातक की सूर्य की कुण्डली उसके आत्म विश्वास को बताती है । लग्न में ही सूर्य की युति शुक्र, बुध और बृहस्पति के साथ है । सूर्य अपने मित्र ग्रह बुध और वृहस्पति के साथ लग्न में ही बैठा है अतः जातक आत्मविश्वास से पूर्ण और कार्य कुशलता में श्रेष्ठ रहेगा । सप्तम स्थान पर चन्द्रमा की उपस्थिति और पंचम जिसे प्रेम प्रसंग कहा जाता है वहां पर शुक्र चन्द्रमा की परस्पर दृष्टि होने के कारण जीवन में स्त्रियों का प्रभाव ज्यादा रहेगा । और ऐसा हुआ भी पहले इनके संबंध अंकिता लोखंडेवाल से बना और बाद में रिया चक्रवर्ती नवम स्थान पर केतु मंगल की युति और उस पर राहु की दृष्टि ने इनको राजनीतिक शिकार बनाया और आत्मविश्वास में कोई भी कमी नहीं दिखाई पड़ती ।

वर्तमान में इनकी राहु की महादशा 24 जुलाई 2018 में समाप्त हो चुकी थी और राहु में सूर्य ने इनको काफी उचाईयों पहुचाया । जैसे बृहस्पति की दशा प्रारंभ हुई, वैसे ही इनके लिए बुरा दौर प्रांरभ हुआा इनके सूर्य कुण्डली में गोचर में शनि उपस्थित और द्वादश स्थान पर बृहस्पति केतु की युति इन्हे साजिश में फंसाया गया जिसका निर्णय आज नही तो कल हम सभी के बीच में आएगा ।

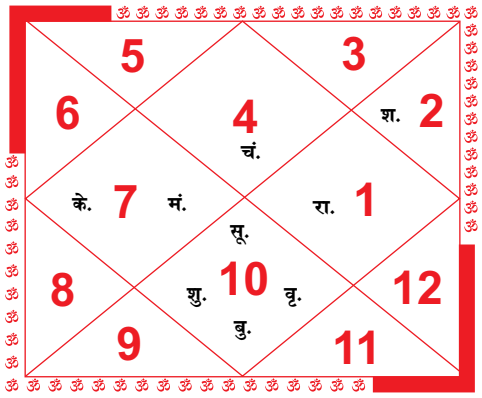

सुशांत सिंह राजपूत की सूर्य कुण्डली

इनकी चन्द्र कुण्डली जो कि अन्दरूनी कार्यों को लेकर देखा जाता है अर्थात मन में क्या चल रहा है । और रक्त का कारक भी मानान जाता है । अगर चन्द्रमाा पीडित हो और चन्द्र कुण्डली में बल न हों तो जातक मानसिक विकारों से ग्रसित रहता है । इनकी चन्द्र कुण्डली में से छठें स्थान पर बृहस्पति की मीन राशि उपलब्ध हैं जिसका सीधा संबंध सप्तम स्थाान में उपस्थित शुक्र और बुध से शुक्र बुध अगर एक साथ किसी भी भाव में बैठ जाए तो जातक रचानत्मक कार्यो में निपूण होता है, परन्तु स्त्रियों को लेकर वाद–विवाद की स्थिति उत्पन्न करता है । 14 जून को जब ये घटना घटित हुई तो गोचर में मकर का वक्री शनि और गुरू के साथ इनकी महादशा गुरू के अन्दर गुरू/राहु के चलते चाण्डाल योग बना और जातक राजनीति का शिकार हुआ ।

निष्कर्ष :

सुशांत सिंह राजपूत की कुण्डली में किसी प्रकार के मानसिक विकार के कारण आत्महत्या की स्थिति नहीं दिखाई देती हालाकि इसका अन्तिम निर्णय फरवरी 2021 तक सभी के सामने आ जाएगा चाहें सी.बी.आई. के द्वारा या ई.डी. के द्वारा इस केस को सफलता पूर्वक हल किया जाएगा और सुशांत सिंह राजपूत को इंसाफ मिलेगा और इस केस में कई नेता अभिनेता के नाम भी 23 सितम्बर राहु केतु के राशि परिवर्तन के बाद दिखाई देगा ।

भारत चीन विवाद कब तक ?

भारत और चीन का विवाद कोई नया नहीं है । इससे पहले भी तीन बार भारत और चीन के बीच में सम्बन्ध खाराब हो चुके है । चाहें वों 20 अक्ट्बर 1962 से 21 नवम्बर 1962 की बात हों या 1967, 71 हमेश चाईना ने अपने बल का प्रयोग करते हुए कुछ ऐसी स्थितियां उत्पन्न कर दी थी जिस कारण वों अपनी बातों पर कायम नहीं रह पाता ज्योतिषाचार्य के.एम. सिन्हा ने एक साल पूर्व ही इस प्रकार की घटना की भविष्यवाणी की थी । और इसी प्रकार से घटना घटित भी हुई

चीन की कुण्डली का अध्ययन

चीन की कुण्डली 1 अक्टूबर 1949 के मकर लग्न की है जहां बुध नवम भाव में सूर्य और केतु के बीच पीड़ित है । और सूर्य से अस्त भी है । चतुर्थ भाव का स्वामी मंगल नीच का होकर युद्ध स्थान अर्थात सप्तम भाव में चन्द्रमा को पीड़ित कर

के सप्पूर्ण रूप से छल कपट का निर्माण कर रहे है । अष्टम स्थान का शनि चीन को धोखें और छल कपट में निपुण भी बना रहा है ।

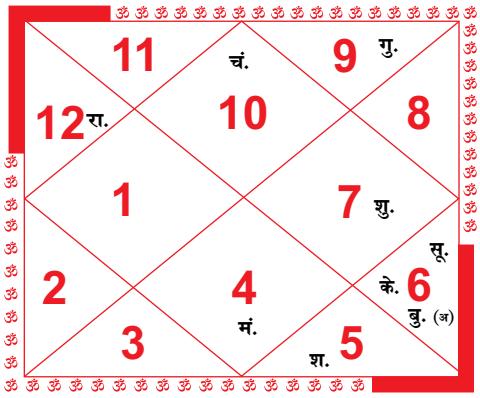

आजाद चीन की जन्म कुण्डली

1962 के युद्ध के समय भी इन्ही दो ग्रहों की स्थिति थी उस समय भी चीन ने मंगल शनि की दशा में भारत पर धोखे से हमला किया था । वर्तमान चीन की कुण्डली में चन्द्रमा साडे सातीं से पीडित है और उसे अपने विनाश की ओर ले जा रहे है । 1962 के समय भारत की लग्न कुण्डली बहुत मजबूत नहीं थी क्योंकि ग्रहों की दशा ठीक नहीं थी परन्तु वर्तमान में भारत की दशा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की दशा अत्याधिक प्रबल होने के कारण चीन को कुछ दिनों के लिये पीछे होना पडेगा परन्तु नवम्बर 2020 के बाद एक बार पुनः चीन अपने पुराने रवियें पर वापस आएगा ।

स्वतंत्र भारत की कुण्डली का अध्ययन

स्वतंत्र भारत की कुण्डली वृषभ लग्न की है और वर्तमान में चन्द्रमा में शनि की दशा चला रही है । जो भारत के आर्थिक और मानसिक दृष्टिकोण से शुभ नहीं है शनि चन्द्रमा से सप्तम भाव होकर शत्रु कर्क के छठें घर में शुक्र के साथ युति किया हुआ है ।

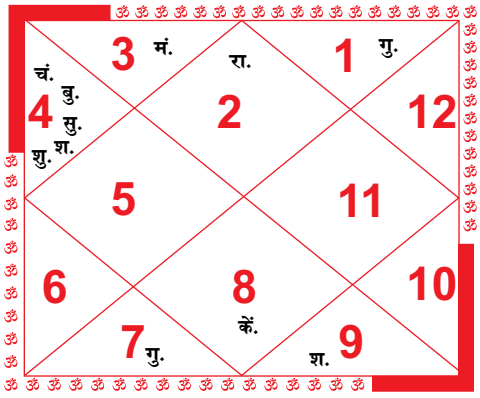

आजाद भारत की जन्म कुण्डली

1962 की तरह मकर में गोचर कर रहा है । शनि और गुरू चन्द्रमा से सप्तम भाव में होकर युद्ध की स्थिति बना रहा है । और कुछ प्रकृतिक आपदाओं में नुकसान के बाद भारत की सैन्य शक्ति मजबूत बनी रहेंगी । और भारत चीन के आगे नहीं झुकेगा 23 सितम्बर 2020 राहु केतु का राशि परिवर्तन भारत के लग्न में राहु का गोचर अपने मित्र शुक्र की राशि में होने के कारण कई मित्र देशो का सहयोग प्राप्त होगा । और भारत की स्थिति मजबूत बनी रहेगी।

आपके प्रश्नों के उत्तर

कुण्डली एक्पर्ट के लाइव प्रोगाम में जिन लोगो नें लाइव चैटिंग में प्रश्न पूछे थे । उनमें से कुछ के प्रश्नों के उतर यहां पर उपलब्ध है ।

महादेव लाइव प्रसारण में प्रत्येक रविवार के चैट में पूछे गये प्रश्नों के उतम इस मैगजिन में प्रकाशित होंगे ।

प्रश्न 1. मेरा नाम सुशांत वैद्यय है जन्म तारीख 1 फरवरी 1990, बिलासपुर छतीसगढ़ में 5.30 साय जन्म हुआ था । मेरी कुण्डली में स्थान परिवर्तन का योग कब होगा ?

उतर : आपकी कुण्डली कर्क लग्न और मेष राशि की है और वर्तमान में सूर्य के अन्दर बुध की महादशा 1 अक्टूबर 2020 तक है । अतः परिवर्तन योग का निर्माण 1 अक्टूबर 2020 से पहले –पहले हो जाएगा ।

प्रश्न 2. मेरा नाम ऋषिकेश भोखारे है । जन्म तिथि 7 अगस्त 1994 रात्रि 9.52 मिनट पर मुम्बई में जन्म हुआ था । क्या में कुण्डली में प्रेम विवाह के योग है ?

उतर : आपकी कुण्डली का लग्न मीन और चन्द्र राशि कर्क है । पंचमेश और सप्तमेश की युति होने के कारण प्रेम सम्भावना अधिक है परन्तु शुक्र अपने नीच होने के कारण प्रेम विवाह सफल होने के योग कम रहेंगे ।

प्रश्न 3. मेरा नाम नितिश सोनी है जन्म 3 जुलाई 1995 सायं 6.40 दिल्ली में हुआ था मेरा प्रश्न यह है कि मेरा प्रेम विवाह सफल होगा या नही ?

उतर : आपकी कुण्डली का लग्न धनु और राशि सिंह है पंचमेश मंगल और सप्तमेश बुध है पंचमेश अपने मित्र सूर्य के राशि में उपस्थित है और सप्तमेश रोग स्थान पर है अतः प्रेम विवाह की सम्भावना कम है और वर्तमान में चन्द्रमा की दशा चल रही है । शादी का योग 12 फरवरी 2023 तक है । पंचम स्थान पर केतु की उपस्थिति प्रेम से मोक्ष भी दिलाती है । अतः यह भी सम्भावना है अगर प्रेम न हुआ तो जातक किसी से प्रेम नही कर पायेगा ।

प्रश्न : 4. मेरा नाम रिद्धिमा कोहली है और मे चेन्नई से हूँ । जन्म दिन 17 सितम्बर 1983 11.55 ए.एम और जन्म स्थान चेन्नई है । मेरे बहुत सारे पैसे फस गये है । मुझे अपना पैसा कब वापस मिलेगा ?

उतर : आपकी कुण्डली का लग्न वृश्चिक और चन्द्र राशि मकर है धन स्थान का स्वामी बृहस्पति राहु और केतु से दृस्ट है और वर्तमान में राहु की दशा 11 नवम्बर 2020 तक चलेगी । अभी आपका पैसा नहीं मिल पायेगा 25 जून 2021 से 13 अक्टूबर 2021 के मध्य पैसे मिलने की सम्भावना है ।

प्रश्नः 5. मेरा नाम नीतू सिंह है जन्म तिथि 15 मई 1995 समय 13.55 मिनट और जन्म स्थान पूणे महाराष्ट्र क्या मेरा चयन सिविल सर्विस में हो पायेगा ?

उतर : आपकी कुण्डली का लग्न सिंह और चन्द्र राशि वृश्चिक है चतुर्थ स्थान में गज केसरी योग और दशम स्थान पर बुध आदित्य योग का निर्माण हुआ है । वर्तमान में दशा बुध में राहु की चल रही है । 8 जनवरी 2021 के बाद निश्चित रूप से सिविल सर्विसेज या किसी प्रशासनिक सेवा में चयन होगा ।

प्रश्न 6. मेरा नाम अभिषेक श्रीवास्तव है जन्मदिन 26 मार्च 1987 और जन्म समय सुबह 6.10 मिनट दिल्ली में हुआ था । मेरी वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं चल रहा है । मुझे क्या करना चाहिए ।

उतर : आपकी कुण्डली का लग्न मीन और मकर राशि है लग्न में राहु और सूर्य युति और सप्तम स्थान पर केतु की उपस्थिति आपके वैवाहिक जीवन को प्रभावित कर रही है । और आपका शुक्र लग्न से द्वादश है 18 मई 2022 तालाक के योग उपस्थित है । वैवाहिक जीवन को सही करने के लिए राहु की शांति करायें और शुक्र को कुछ मिष्ठान गरीबों में वितरीत करें ।

मोदी जी का वर्तमान समय कैसा ?

By Astrologer KM SINHA

माननीय नरेन्द्र मोजी जी का जन्म 17 सितम्बर 1950 सुबह 11 बजें मेहसाना गुजरात में हुआ था ।

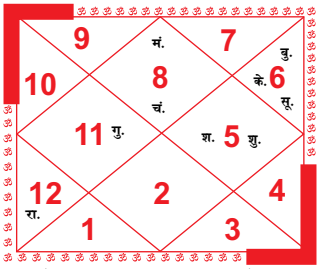

श्री मोदी जी जन्मकुण्डली के अनुसार उनका जन्म शनि की महादशा में हुआ था जो 1961 तक उनके जीवन को प्रभावित किया इनकी लग्न कुण्डली में शनि अपने परम शत्रु सूर्य की राशि में बैठा है और मेहनत का मालिक होकर छोटे भाई बहनों के स्थान में बाल्य काल से ही काफी कष्ट प्रदान किया यहा तक कि इनको अपने जीवन यापन करने के लिए रेल में चाय भी बेचनी पड़ी । परन्तु यही कुण्डली पूरी दुनिया में आश्चर्य चकित कर रही है । ज्योतिष दृष्टि कोण से इनके लग्न में नीच का चन्द्रमा नीच भंग राज योग बना रहा है और चन्द्रमा की स्थिति मंगल के साथ महा लक्ष्मी का निर्माण कर रही है ।

परन्तु इनकी सप्तम दृष्टि अपने शत्रु शुक्र के स्थान पर पड़ने के कारण इनका विवाहिक जीवन अच्छा नहीं रहा और दशम स्थान पर नीच अभिलाषी दृष्टि इनको सब कुछ प्राप्त होने के बाद भी इनको सादा जीवन पसन्द है ।

एकादश स्थान पर सूर्य बुध की उपस्थिति के साथ केतु की युति भी इसी दिशा में धन का उपयोग निजि स्वार्था के लिए नहीं कराता है । 17 साल की उम्र में इनका विवाह समपन्न हुआ 1985 से 2005 तक इनके जीवन में शुक्र की महादशा रही और इस कारण इन्हे यश की प्राप्ति हुई और यही ग्रहों की युति 2001 में इनकों गुजरात के मुख्य मंत्री पद पर आसीन करवाया । शनि शुक्र का योग विलम्ब के बाद ही सही परन्तु उच्च राजनैतिक पद पर आसीन कराया । पंचम स्थान पर बैठा राहु इनको राजनैतिक दिशा में सफलता प्रापत कराता है । और इनका अपना निर्णय वो भी गुप्त तरीके से प्रयोग कराता है । उदाहरण के तौर पर नोट बंदी इत्यादि ।

वर्तमान में मोदी जी की चन्द्रमा की महादशा चल रही है जो 2020 दिसम्बर तक चलेगी और सूर्य की अन्तर्दशा प्रारम्भ होने वाली है । चन्द्रमा माननीय मोदी जी के कुण्डली में भाग्य स्थान का स्वामी है और भाग्येश की महादशा भी चल रही है । शुक्र कुण्डली के सातवें घर और बारहवें घर का मालिक होकर दसवें घर में शनि के साथ बैठा है । और आने वाला टाइम इनके माता के लिये कुछ कठिन हो सकता है । परन्तु मोदी जी का समय वर्तमान में अच्छा परिणाम दे रहा है । और आगे भी अच्छा परिणाम देता रहेगा ।

अपने नक्षत्र को पहचानें

अश्विनी नक्षत्र

राशि–चक्र में 0.00 डिग्री से 13. 20 डिग्री तक का विस्तार क्षेत्र अश्विनी नक्षत्र कहलाता है । हिन्दु पौराणिक कथा के अनुसार ''अश्विनी'' नाम, दो ''अश्विन'' से उत्पन्न हुआ है । ग्रीक में इसको "Castor and Pollusx", अरब मंजिल (Arab Manzil) में अष–षराटण (Ash-Sharatan) और चीनियों का "Sieu" में "Leu" माना जाता है । 'चकलय' तथा 'खण्ड–काटक' के अनुसार अश्विनी समूह दो अश्विनियों के प्रती दो सितारों का समूह है । कोलब्रुक तथा बाद की धारणाओं के अनुसार अश्विनी नक्षत्र समूह दो अश्व के मुख के प्रतीक तीन सितारों का समूह है ।

अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठाता स्वामी 'दो अश्विन' है । अश्विन के दो भुजाएं होती है तथा ये सूर्य तथा सविता के वाहन है । एक अन्य मतानुसार ये देवताओं के चिकित्सक हैं । वेदो के अनुसार सृष्टि के आरम्भ में केवल सृष्टा था, जो प्रजा तथा पालन दोनों का पार्ट अदा करता था/अर्थात् सृष्टा ही प्रजा तथा पालक दोनों रूपों में विद्यमान था और उसक उदेश्यहीनता का सामना करना पड़ता था । अपनी इस एकान्तता की स्थिति से बचने के लिए सृष्टा ने विभिन्न रूपों की रचना की जो देवता कहलायें । इन रूपों में प्रथम कृति दो भुजाओं वाले अश्विन थी ।

I. अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातकों के सामान्य परिणाम

(क) पुरूष जातक

1. शारीरिक गठन – अश्विनी नखत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर मुखाकृति के, चमकदार तथा बड़ी आँखों वाले, माथा चौड़ा तथा नासिका कुछ बड़ी होती है ।

2. स्वभाव तथा सामान्य घटना – इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक शान्त स्वभाव वाले होते हैं । वे अपना कार्य चुपचाप, बिना किसी को जताये, करते हैं । ये अपने निर्णयों में हट्ठी किस्म के होते है । विशेषकर 14 से 28 अप्रैल के बीच उत्पन्न जातकों में यह हठीलापन कुछ अधिक होता है । इस काल में सूर्य अपने उच्च स्थान में चलता रहता है तथा 14 से 28 अक्टूबर के बीच सूर्य अपने नीच स्थान नक्षत्र पर चलता रहता है । यह धारणा है कि मृत्यु का देवता 'यम' भी इस प्रभाव से बच नही सकता । अन्य महीनों में अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्तियों में यह हठीलापन कम मात्रा में पाया जाता है ।

ये जातक अपने से प्रेम करने वालों पर सब कुछ कुर्बान कर देने वालें होते है । ये विपतियों में भी घबरानें वाले नहीं होते बल्कि विपतियों में घिरें अन्य लोगों की मदद करते है । लेकिन ये अपनी विवेचना सहन नहीं कर पातें और बुरा मानते है ।

ये जातक अपना कार्य अपने ढंग से, सोच विचार कर करता है तथा किसी से भी प्रभावित नहीं होता । जब वह किसी कार्य को करने की धारणा बना लेता है तो कुछ भी परिणाम निकले, वह करके रहता है ।

यह भगवान में दृढ़ विश्वास रखता है । लेकिन धर्मान्ध नहीं होता । वह अपने रूढ़ीवादी विचारों के प्रति आधुनिक होता है ।

यद्यपि वह बुद्धिमान होता है मगर अक्सर मामलों को तूल देता है, जिस कारण वह मानसिक परेशानी में पड़ जाता है । वह सदैव अपने वातावरण को अपने अनुकूल बनाने का इच्छुक होता है ।

यदि उसका जन्म अश्विनी नक्षत्र के 2.00 से 3.00 डिग्री के बीच हुआ है तो वह बिना बात के हठीला होगा और परिणामतय चोरी या तस्करी के कार्य करेगा । यदि अन्य विलय ठीक भी हो तो उसके पास धन तो होगा लेकिन वह उसका उपभोग नहीं कर सकेगा । वह अपने परिवार के लिए बदनामी का भी कारण बनेगा ।

3. शिक्षा, रोजगार/आय के साधन– जातक हर काम में उस्ताद होता है । वह प्रायः संगीत का शैकीन तथा सहित्य प्रेमी होता है । 30 वर्ष की आयु तक उसका जीवन संघर्षपूर्ण होता है और उसे छोटी–छोटी बातों के लिए भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा । इसके बाद 55 वर्ष की आयु तक इसके जीवन में निरन्तर उन्नति होगी ।

उसके स्वाभाव की एक विशेषता यह भी है कि वह कृपण होता है लेकिन अपनी शान दिखाने के लिए आय से ज्यादा खर्च कर बैठता है । वह अपनी जरूरतों को किसी भी कमीत पर पूरा करने का निरन्तर प्रयत्न करता रहता है ।

4. परिवारिक जीवन–जातक अपने परिजनों से प्यार करता है, मगर अपने

उतेजित व्यवहार के कारण वह उनकी घृणा का पात्र बन जाता है । उसे अपने पिता से वह स्नेह व देखभाल नहीं मिलती जिसका यह अधिकारी है । अर्थात उसे पिता से उपेक्षा मिलती है । उसे जो भी अवलंबन मिलता है वह मामा से ही मिलता है । अन्य बाहरी व्यक्ति भी उसकी सहायता करते है । प्रायः 26 से 30 वर्ष की आयु में विवाह का योग है और पुत्रों की संख्या पुत्रियों से अधिक होगी ।

5. स्वास्थ्य – उसका स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहेगा । फिर भी यदि उसका जन्म अश्विनी नक्षत्र के 2.00 से 3.00 डिग्री के मध्य हुआ है तो स्वास्थ्य में कुछ परेशानी हो सकती है । उसे सिरदर्द (मिग्रेन), हदय रोग आदि हो सकते है । उपचार के लिए उसे इस अध्याय के अन्त में दिये उपायों को अपनाना चाहिए ।

(ख) स्त्री जातक

इस नक्षत्र में उत्पन्न कन्याओं में भी पुरूष जातकों वाली उपरोक्त सामान्य परिणाम पाये जाते है । इसके अतिरिक्त निम्न विशेषताएं और मिलती है –

1. शारीरिक गठन– मछली के समान छोटी व चमकदार आँखें, वह आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है । अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव के समय पर यदि उसमें प्रथम ऋतुश्राव के लक्षण प्रकट हो तो प्रचुर धन, वैभव और सन्तान का योग है ।

2. स्वभाव तथा सामान्य घटना– अपने मधुर वचनों से वह प्रत्येक व्यक्ति की आकर्षण प्राप्त करती है । वह क्षमा बनायें रखती है तथा गहन मैधुन में मग्न रहती है । यह साफदिल होती है तथा आधुनिक समाज में रहते हुए भी बुजर्गों का सम्मान प्राचीन मान्यताओं के अनुसार करती है ।

3. शिक्षा, रोजगार/आय के साधन– यदि नौकरी पर होगी तो वह 50 वर्ष की आयु के बाद अपने कार्य में रूचि नहीं लेगी अथवा वह स्वैच्छिक निवृति अपना लेगी । इस अवस्था तक उसकी आर्थिक दशा अच्छी होने के कारण उसके कम न करने को कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा । यदि अन्य सांसारिक अथवा ग्रह दशा प्रतिकूल न हों तो वह अपना समय सामाजिक कार्यों में लगायेगी । अथवा परिवार की देखभाल करेगी । वह प्रशासनिक पदों (आई.ए.एस. सहित) के लिए विशेषता निमित है ।

4. परिवारिक जीवन – प्रायः23 से 26 वर्ष की आयु में विवाह का योग है । यदि इससे पूर्व विवाह होता भी है तो इसका परिणाम विवाह–विच्छेद अथवा लम्बा समय तक पति से दूर रहना पड़ेगा या पति की मृत्यु भी हो सकती है ।

पुत्रियों की संख्या पुत्रों से अधिक होगी । वह अपने बच्चों की वाछित आवश्यकताओं की पूर्ति सहजता से करेगी । वह घर की देखभाल, समय रहते या तो स्वयं करेगी अथवा दूसरों से करायेगी । यदि शुक्र अश्विनी के चौथे घर में होगा तथा इस पर चन्द्रमा की दृष्टि होगी तो कई सन्तानों का योग है मगर उनमें जीवित कुछ ही रहेगी ।

6. स्वास्थ्य – उसका स्वास्थ्य प्रायः ठीक, रहेगा । अनावश्यक चिंताए या मानसिक परेशानियां अवश्य थोड़ा स्वास्थ्य पर प्रभाव छोड़ेगी । लेकिन जब ये परेशानियों नियन्त्रण से बाहर होगी तो बड़ी अवस्था में पागलपन का कारण हो सकती है । उसे खाना पकाते समय अथवा अग्नि के समीप रहते हुए सावधानी बरतनी चाहिए । वाहन दुर्घटना भी हो सकती है ।

बार – बार पेट की ऐंठन, ऊनिंद्रा रोग औश्र ऋतुकाल की परेशानियों हो सकती है । उसे इस अध्याय के अन्त में दिये गये उपायों को अपनाना चाहिए । यदि शुक्र अश्विनी के चौथे भाग (10.00 से 13.20 डिग्री) में हो तथा इस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो ऋतुकाल की परेशानियां प्रायः रहा करेगी ।

II. अश्विनी नक्षत्र में विभिन्न ग्रहों की उपस्थिति के परिणाम सूर्य :–

अश्विनी नक्षत्र में स्थित सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक क्रूर और रक्तिम नेत्रों वाला होगा । यदि बुद्ध की दृष्टि हो तो उसका जीवन सुखमय होगा और वह अच्छे व्यक्तित्व का स्वामी होगी लेकिन आयु के चौथे दशम में धन से विहीन होगा । यदि बृहस्पति की दृष्टि हो तो वह सुहदय होगा औश्र राजसी शक्तियों का उपयोग करेगा । शुक्र की दृष्टि होने पर गहन गतिक्रिया में लिप्त होगा । यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक निर्धन होगा तथा किसी कार्य में उसका मन नहीं होगा ।

सितम्बर राशिफल

(लग्न अनुसार ही देखें)

सितम्बर माह में राहु केतु का राशि परिवर्तन होना है और इसके साथ सूर्य की संक्रांति शुक्र और बुध का राशि परिवर्तन हर लग्न वाले जातकों पर क्या प्रभाव करेगा ।

1. मेष : मानसिक विकार कम होंगे आकस्मात धन लाभ की सम्भावना बढ़ेगी धर्म के प्रति झुकाव और स्थान परितर्वन के योग बन रहे है । वाहन चलातें समय सावधानी बरतें ।

2 वृष : मान पद प्रतिष्ठा मे बढ़ोतरी होगी आय के साधनों में कुछ रूकावट के बाद काम बनेंगे कर्म स्थान में अभी भी स्थान के योग बनें रहेंगे स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे ।

3 मिथुन : मुकदमें बाजी में जीत हासिल होगी प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यार्थी वर्गो में लाभ मिलेगा विदेश से कुछ काम बनने की सम्भावना है और बहुत लंबे समय से पति–पत्नी के बीच चला आ रहा तनाव कम होगा

4 कर्कः आय के साधनों में वृद्धि होगी आकस्मता को बढ़े कोई व्यापारिक समझौते हो सकते है । संतान से कष्ट और प्रेम प्रंसग में रूकावटें आएंगी । दूर संचार माध्यमों से कुछ अच्छे समाचार प्राप्त होंगे । माता के स्वास्थ्य में थोड़ी तकलीफ बढ़ सकती है ।

5 सिंह : परिवार में खुशियों का महौल बनेगा भाग्य का साथ मिलने के कारण भूमि, वाहन और मकान के सुख प्राप्त होंगे । माता के स्वास्थ्य में तकलीफ बनी रहेंगी । और बहुत दिनों से रूका हुआ काम पूर्ण होगा ।

6 कन्या : स्थान परितर्वन के योग बनेगें जीवनसाथी के स्वास्थ्य में गिरावट हो सकती है । छोटे भाई बहनों से तानव की स्थिति होगी तथा भागय का साथ मिलेगा और आर्थिक स्थिति सुधीण होगी ।

7 तुला : कार्य क्षेत्र को लेकर सम्भावना है आय के साधनों में कुछ परेशानियों के बाद सफलता मिलेगी स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है इस समय किसी को पैसे उधार में न दें ।

8 वृश्चिक : धन पर लगा हुआ ग्रहण जिस कारण धन का संचार नही हो पा रहा था उसका संचार अब होने लगेगा मेहनत बढ़ेगी और आय के श्रोत में भी बढ़ोतरी होगी स्वास्थ्य के प्रति अभी भी सचेत रहने की आवश्यकता है । कार्य को लेकर लंबी दूरी की यात्राएं हो सकती है ।

9 धनु : भाग्य का सहयोग मिलने के कारण कार्य को पूर्ण कर पायेंगे नौकरी के क्षेत्र में भाग्य का साथ मिलने वाला जीवनसाथी के साथ चला आ रहा विवाद अब खत्म होगा दूर संचार माध्यमों से कुछ अच्छे समाचार प्राप्त होंगे बात करते समय वाणी पर संयम रखें

10 मकर : पिता पुत्र के बीच में वैचारिक उत्पन्न हो सकते है । आकस्मात लंबी दूरी यात्राओं के योग बनेगें भूमि, वाहन, मकान से संबंधित अच्छे परिणाम सामने आऐंगें शत्रओं का विनाश होगा ।

11 कुंभ : वाणी पर संयम रखें परिवार में खुशियों का महौल बनने वाला है । परन्तु स्वास्थ्य के प्रति अभी भी सचेत रहें त्वचा संबंधित बिमारियां बढ़ सकती है । प्रेम प्रसंग बढा चढ़ा रहेगा । विद्यार्थी वार्गो को प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलने की सम्भावना रहेगी ।

12 मीन : जीवनसाथी के स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव हो सकता है छोटे भाई बहनों का सहयोग मिलेगा पिता के स्वास्थ्य में अचानक गिरावट उत्पन्न हो सकती है । आय के श्रोत बढ़ेगें और बहुत दिनों से सोचा हुआ कार्य पूरा होगा ।

ज्योतिषाचार्य
के.एम. सिन्हा

Kundali expert
For Better Future
TM

KM SINHA

World Famous

- ASTROLOGER -

VISITING CENTER (INDIA)

Mumbai, Delhi, Kolkata, Chennai, Ahmedabad
Bhubneshwar, Chandigarh, Lucknow,
Jaipur, Gorakhpur, Ghaziabad, Bangalore, Hyderabad

VISITING CENTER (ABROAD)

Indonesia, Australia
Philippines, USA, UK

KUNDALI EXPERT

B1-101, Block E, Raj Nagar Extension, Ghaziabad 201017
Contact us : 98-183-183-03

Follow us: